A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 14 नवंबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-75 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

महाराष्ट्र : बाल ठाकरे से कितनी अलग है उद्धव की राजनीति ?

अंशुल सिंह

अब्दुल हामिद नागपुर के रहने वाले हैं लेकिन पिछले 28 साल से वो मुंबई में टैक्सी चला रहे हैं। मौजूदा चुनाव के बारे में वो कहते हैं कि चुनाव खिचड़ी हो चुका है, कौन किसके साथ है ये तय करना ही मुश्किल हो गया है। उद्धव ठाकरे की मुसलमानों तक पहुँचने की कोशिशों के बारे में वो कहते हैं, 'उद्धव की शिव सेना कांग्रेस के साथ है, इसलिए वो बीजेपी जैसा हिंदुत्व पेश नहीं कर सकती। मुस्लिम बीजेपी के ख़िलाफ़ वोट करते हैं इसलिए कांग्रेस के साथ गठबंधन में रहने से शिव सेना को फ़ायदा मिल जाता है और मुसलमानों के वोट मिलने की संभावना बढ़ जाती है।'

महाराष्ट्र में 20 नवंबर को मतदान है। पिछले विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी और उद्धव ठाकरे की शिव सेना साथ थी। अब उद्धव ठाकरे और बीजेपी आमने-सामने हैं। बीजेपी से अलग होने के बाद उद्धव ठाकरे ने अपनी सियासी रणनीति भी बदली है और मुसलमानों तक पहुँचने की उनकी कोशिश इसी रणनीति का हिस्सा है।

लोकसभा चुनाव के दौरान मई में उद्धव ठाकरे मुंबई के ही चेंबूर के पास चीता कैंप नाम की बस्ती में पहुंचे थे। इस इलाक़े में मुस्लिमों की अच्छी खासी आबादी रहती है और उद्धव ने यहां मराठी की जगह हिन्दी में भाषण दिया था। सामने मुसलमान मतदाताओं की भीड़ और उद्धव कहते हैं, 'मैं तो शायद पहली बार आपके सामने आया हूँ क्योंकि हमारे बीच एक दीवार थी। हम एक दूसरे से लड़ाई करते थे। एक सवाल मैं आपसे पूछता हूँ क्या मैंने हिंदुत्व छोड़ा है?' 'क्या मेरा हिंदुत्व आपको मंज़ूर है? मेरे हिंदुत्व और भाजपा के हिंदुत्व में फ़र्क़ है या नहीं है? मैं भी जय श्री राम कहता हूं लेकिन मेरा हिंदुत्व, हृदय में राम और हर एक हाथ को काम देने वाला हिंदुत्व है। हमारा हिंदुत्व घर का चूल्हा जलाने वाला हिंदुत्व है, घर जलाने वाला नहीं।' लोकसभा चुनाव के दौरान उद्धव ठाकरे ने शिव सेना भवन में मुस्लिम मतदाताओं के साथ मुलाक़ात कर ये बताने की कोशिश की थी कि वो संविधान बचाना चाहते हैं।

इसी साल फ़रवरी में रायगढ़ ज़िले में मुस्लिम समुदाय ने उद्धव ठाकरे को मराठी में लिखी क़ुरान उपहार में दी थी। तब उन्होंने कहा था, 'मुझे मराठी में क़ुरान दी गई। यही हमारा हिंदुत्व है। इसलिए किसी को भी हमारे हिंदुत्व पर संदेह नहीं करना चाहिए।'

उद्धव ठाकरे की मुसलमान वोटरों तक पहुंचने की ये कोशिशें उनके पिता बाल ठाकरे की राजनीति से बिल्कुल अलग हैं। इसकी क्या वजह है और क्या ये कोशिशें क़ामयाब हो रही हैं? मुस्लिम मतदाता उद्धव की इन कोशिशों के बारे में क्या सोचते हैं और क्या इससे शिव सेना के परंपरागत वोट बैंक पर कोई असर पड़ रहा है।

1987 में मुंबई के विले पारले के उपचुनाव में बाल ठाकरे ने एक सभा में कहा था, 'हम ये चुनाव हिंदुओं की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। हमें मुस्लिम वोटों की परवाह नहीं है। यह देश हिन्दुओं का है और उनका ही रहेगा।' इस चुनाव में शिव सेना उम्मीदवार रमेश प्रभु की जीत हुई थी, लेकिन 1989 में बॉम्बे हाई कोर्ट ने बाल ठाकरे और रमेश प्रभु दोनों को ही भड़काऊ भाषण के मामले में दोषी पाया और नतीजे को रद्द कर दिया। रमेश प्रभु ने हाई कोर्ट के इस फ़ैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी लेकिन दिसंबर, 1995 में सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाई कोर्ट के फ़ैसले को बरकरार रखा। एक दौर ऐसा भी था, जब बाल ठाकरे ने मुसलमानों के मताधिकार को वापस लेने की बात कही थी। बाल ठाकरे की इस मांग को शिव सेना ने साल 2015 में भी दोहराया था। उद्धव ठाकरे का भी ये 'मुस्लिम प्रेम' बहुत पुराना नहीं है। अप्रैल, 2023 में एक प्रेस कॉन्फ़्रेंस में उद्धव ठाकरे ने कहा था, 'जिस दिन बाबरी मस्जिद गिरी थी, मैं बाला साहेब के पास गया था। उन्होंने बताया कि बाबरी मस्जिद गिर चुकी है। इसके बाद संजय राउत का फोन आया। बाला साहेब ने उनसे कहा था कि अगर बाबरी मस्जिद शिव सैनिकों ने गिरा दी है, तो उन्हें गर्व है।' अब उद्धव ठाकरे राज्य भर के मुस्लिम वोटरों से साथ आने की अपील करते नज़र आ रहे हैं। वो शिंदे जो कभी उद्धव ठाकरे के साथ थे लेकिन जब शिव सेना में टूट हुई तो शिंदे, बीजेपी के साथ होकर राज्य के मुख्यमंत्री बन गए। 12 अक्टूबर को एकनाथ शिंदे ने कहा था, 'सत्ता की भूख आपके (उद्धव) शरीर और मन में आ चुकी है। अब आप पाकिस्तान की बोली बोलने लगे हो। बाला साहेब एक मिनट भी इनके साथ नहीं रहते।'

बीते गुरुवार को राज ठाकरे ने चुनाव प्रचार के दौरान कहा कि 'उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री बनने के बाद शिव सेना के होर्डिंग्स से 'हिंदू हृदय सम्राट' हटा दिया क्योंकि कांग्रेस और एनसीपी को हिंदू शब्द पसंद नहीं था। कई होर्डिंग्स में तो 'जनाब बालासाहेब ठाकरे' उर्दू में लिखा गया था।' उद्धव की तरफ़ से इस बयान का जवाब दिया गया और उन्होंने राज ठाकरे को हज ठाकरे बताया। वरिष्ठ पत्रकार जयदेव डोले कहते हैं, 'उद्धव जब से महाविकास अघाड़ी या इंडिया गठबंधन में जुड़े तब से उन्हें समझ में आ गया है कि हिन्दुत्व का मुद्दा क्षेत्रीय पार्टियों के लिए अब सही नहीं है। अगर हिन्दुत्व की राजनीति ही करनी है तो अब तो उसमें सबसे अच्छा विकल्प बीजेपी हो गई है।' महाराष्ट्र में क़रीब 12 फ़ीसदी मुस्लिम मतदाता हैं और मुंबई में मुसलमानों की आबादी करीब 22 फ़ीसदी है।

क्या मुसलमानों के प्रति उदार होने से शिव सेना के हिंदू वोट बैंक पर कुछ असर पड़ सकता है? वरिष्ठ पत्रकार सुधीर सूर्यवंशी कहते हैं, 'जितना हिन्दू वोट बैंक खिसकना था वो एकनाथ शिंदे के साथ चला गया है। मुस्लिम वोट बैंक की वजह से उद्धव को कुछ लोकसभा सीटों पर फ़ायदा हुआ है तो ये उनके पक्ष में ही है।'

इसी साल हुए लोकसभा चुनाव में उद्धव ठाकरे ने एक भी मुस्लिम उम्मीदवार नहीं उतारा था। विधानसभा चुनाव में भी उन्होंने सिर्फ़ एक मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट दिया है। हारुन ख़ान मुंबई की वर्सोवा सीट से शिव सेना (यूबीटी) उम्मीदवार हैं। इस बारे में समाजसेवी ज़ैद ख़ान का कहना है कि कांग्रेस और शिव सेना (यूबीटी) को मुस्लिम समुदाय के वोट चाहिए लेकिन उनकी नुमाइंदगी देना नहीं चाहते हैं। वैसे असली शिव सेना किसकी है वो इस विधानसभा चुनाव से तय होगा।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

रोटी-बेटी-माटी की सुरक्षा से खिलवाड़ नहीं होने देंगे

मोदी बोले-

- जेएमएम-कांग्रेस बहुत बड़ी साजिश कर रहे

देवघर में कहा-

- हमने झारखंड को बनाया, हम ही संवारेंगे

देवघर (एजेंसी)। पीएम मोदी तीसरी बार झारखंड पहुंचे। पीएम मोदी यहां देवघर के सारठ में जनसभा को संबोधित कर रहे हैं।

मोदी ने कहा इस चुनाव में रोटी-बेटी-माटी की सुरक्षा सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण मुद्दा है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भाजपा-एनडीए की सरकार संथाल की और झारखंड की रोटी-बेटी-माटी की सुरक्षा से कोई खिलवाड़ नहीं होने देगी। जेएमएम-कांग्रेस सरकार में बाहर से आए घुसपैठियों को यहां का परमानेंट निवासी बनाने के लिए हर गलत काम किए गए। इन घुसपैठियों के लिए रातों-रात पक्के कागज बनाए गए। आदिवासी बेटियों को शादी के नाम पर ठगा गया और उनकी जमीन हथिया ली गई। इन घुसपैठियों ने आपसे आपका रोजगार छीन लिया और आपकी रोटी भी छीन ली।

10 राज्यों की 31 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव खत्म

नई दिल्ली (एजेंसी)। झारखंड में पहले फेज की 43 सीटों के साथ ही 10 राज्यों की 31 विधानसभा और केरल की वायनाड लोकसभा सीट पर बुधवार सुबह 7 बजे से वोटिंग शुरू हो गई है। रिजल्ट 23 नवंबर को आएगा। पश्चिम बंगाल में नॉर्थ 24 परगना जिले के जगतदल इलाके में कुछ लोगों ने एक टीएमसी नेता अशोक साहू पर बम फेंके और गोलीबारी की। इसमें उनकी मौत हो गई। वे टीएमसी से पूर्व वार्ड अध्यक्ष रह चुके हैं। राजस्थान के देवली-उनियारा सीट पर कांग्रेस के बागी और निर्दलीय उम्मीदवार नरेश मीणा ने एसडीएम अमित चौधरी को थप्पड़ जड़ दिया। वे समरावता मतदान केंद्र जबरन घुसने की कोशिश कर रहे थे। बिहार के तरारी विधानसभा सीट पर वोटिंग को लेकर दो पक्षों के बीच झड़प हो गई। दोनों गुटों में हुई मारपीट में 6 लोग घायल हुए हैं।

अब कुलगाम में सुरक्षाबलों की आतंकियों से मुठभेड़

नॉर्थ कश्मीर में पिछले आठ दिनों में यह छठी मुठभेड़

कुलगाम (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में कुलगाम जिले में बुधवार दोपहर सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई है। अधिकारियों ने बताया कि ये एनकाउंटर यारीपोरा के बाडीमर्ग में चल रहा है। मंगलवार को भी कुपवाड़ा जिले के नागमर्ग इलाके में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई थी। यहां दो आतंकियों के छिपे होने की आशंका जताई गई थी। सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेरकर मंगलवार देर रात तक सर्चिंग की थी, लेकिन आतंकियों का पता नहीं चल सका था। वहीं, नॉर्थ कश्मीर में पिछले 8 दिनों में यह छठी मुठभेड़ है। इससे पहले बांदीपोरा, कुपवाड़ा और सोपोर में मुठभेड़ हो चुकी है।

सुप्रभात

ध्यान में आ कर बैठ गए हो तुम भी नाँ
मुझे मुसलसल देख रहे हो तुम भी नाँ
दे जाते हो मुझ को कितने रंग नए
जैसे पहली बार मिले हो तुम भी नाँ
हर मंज़र में अब हम दोनों होते हैं
मुझ में ऐसे आन बसे हो तुम भी नाँ
इश्क़ ने यूँ दोनों को हम आमेज़ किया
अब तो तुम भी कह देते हो तुम भी नाँ
ख़ुद ही कहो अब कैसे सँवर सकती हूँ मैं
आईने में तुम होते हो तुम भी नाँ
बन के हँसी होंटों पर भी रहते हो
अश्कों में भी तुम बहते हो तुम भी नाँ
मेरी बंद आँखें तुम पढ़ लेते हो
मुझ को इतना जान चुके हो तुम भी नाँ
माँग रहे हो रुख़्सत मुझसे और ख़ुद ही
हाथ में हाथ लिए बैठे हो तुम भी नाँ।

– अंबरीन हसीब अंबर

म.प्र.बना मसाला स्टेट, प्रदेश के किसानों ने उगाई 54 लाख टन मसाला फसलें, देश में पहला स्थान

मिर्च के उत्पादन में प्रदेश को मिला दूसरा स्थान

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के किसानों ने मसाला फसलों के उत्पादन में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। 2023-24 में रिकॉर्ड 54 लाख टन से अधिक मसालों के उत्पादन के साथ प्रदेश ने देश में पहला स्थान प्राप्त किया है। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने इस उपलब्धि पर प्रदेश के किसानों को बधाई दी है। उन्होंने इस सफलता का श्रेय किसानों की मेहनत और लगन को दिया गया है।

कृषि को लाभकारी बनाने के उपाय- प्रदेश के किसानों ने पिछले 4 सालों में 2 लाख 16 हजार मिट्रिक टन मसाला फसलों के उत्पादन में वृद्धि की है। मिर्च के उत्पादन में दूसरा स्थान मिला है। मंत्री कुशवाह ने कहा कि किसानों के लिए यह आवश्यक है कि वे पारंपरिक कृषि फसलों के साथ-साथ कैश क्रॉप्स जैसे धनिया, हल्दी, मिर्च, अदरक, लहसुन और जीरा भी उगाएं। इन मसाला फसलों का उत्पादन अल्प समय में किया जा सकता है और बाजार में

अच्छे दाम भी मिलते हैं। यह फसलें किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकती हैं।

उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री कुशवाह ने दी बधाई- मध्यप्रदेश के किसानों ने मसाला फसलों के उत्पादन में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। 2023-24 में रिकॉर्ड 54 लाख टन से अधिक मसालों का उत्पादन प्रदेश के समग्र विकास की दिशा में एक अहम कदम है।

फ्लोरीकल्चर और फलोद्यान अपनाने की सलाह- मंत्री ने किसानों को मसाला फसलों के साथ-साथ फलोद्यान और फ्लोरीकल्चर (फूलों की खेती) को भी अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में भी किसानों को राज्य और केंद्र सरकार द्वारा अनुदान और अन्य सुविधाएं मिल रही हैं। इसके अलावा, शासकीय नर्सरियों से उत्तम गुणवत्ता के बीज और पौधे उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

फसलों के संरक्षण के लिए योजनाएं- कुशवाह ने खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में भी किसानों को मदद देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस और भंडारण सुविधाओं के लिए विभिन्न योजनाएं बनाई गई हैं। इन योजनाओं के तहत किसानों को अनुदान, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे वे फसलों के संरक्षण और भंडारण में सक्षम हो सकें।

किसी भी पद पर रहें, मित्रता भाव हमेशा बनाए रखना : डॉ. यादव

मैंने कॉलेज प्रेसिडेंट बनने छोड़ी एमबीबीसी सीट, हारकर फिर चुनाव लड़ने वाले नेताओं से सीखो

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विद्यार्थियों को अपना जुनून हमेशा कायम रखना चाहिए। इच्छाशक्ति जितनी दृढ़ होगी, लक्ष्य उतना ही आसान होगा। उन्होंने कहा कि जीवन में किसी भी पद पर पहुंचे, मित्रता का प्रेमभाव हमेशा बनाए रखना। इसका सबसे अच्छा

उदाहरण श्रीकृष्ण और सुदामा की दोस्ती का है। उनकी दोस्ती 11 वर्ष की उम्र में हुई थी और जब वे द्वारका के राजा बने तब भी उनकी दोस्ती ने दुनिया के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव राजस्थान के कोटा जिले में एलन शिक्षण संस्थान के समउन्नत भवन में विद्यार्थियों से चर्चा कर रहे थे। प्रारंभ में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का विद्यार्थियों ने गजहार पहनाकर स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लक्ष्य प्राप्ति का इससे अच्छा उदाहरण दूसरा नहीं हो सकता कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात में पहली बार विधायक बनने के साथ ही मुख्यमंत्री बने और लगातार तीन बार मुख्यमंत्री रहे। मुख्यमंत्री के बाद वे पहली बार सांसद बनें और पहली बार में ही देश के प्रधानमंत्री बनें। इसके बाद लगातार सांसद बने और प्रधानमंत्री भी। उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में हैट्रिक भी बनाई। आर्थिक दृष्टि से गुजरात देश के अन्य राज्यों की तुलना में अग्रणी है। बुधवार को सीएम डॉ मोहन यादव ने राजस्थान कोटा में कोचिंग कर रहे मप्र के स्टूडेंट्स के साथ चर्चा की। सीएम ने हास - परिहास के माहौल में कोचिंग स्टूडेंट्स को संबोधित किया।

कॉलेज प्रेसिडेंट का चुनाव लड़ने छोड़ दी डॉक्टर की पढ़ाई

सीएम ने कहा, मैं फर्स्ट ईयर में साइंस कॉलेज में जॉइंट सेक्रेटरी का चुनाव लड़ा। उस समय पीएमटी होती थी। 16 साल की उम्र में जॉइंट सेक्रेटरी बन गया। मेरे पहले 10-20 साल से परिषद जीती नहीं थी। हमारे आने के बाद जीत गई। तो जैसे पीएमटी में सिलेक्शन हुआ तो इंदौर मेडिकल कॉलेज में एडमिशन ले लिया। हमारे यहां के लोग बोले तुम कहां जा रहे हो। मैंने कहा मैं डॉक्टर बनने जा रहा हूं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण 11 वर्ष की आयु में मथुरा से राजस्थान होते हुए मध्यप्रदेश के उज्जैन पधारे थे। भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी यात्रा के दौरान प्रदेश में जहां-जहां विश्राम किया या ठहरे उन स्थानों को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा धार्मिक महत्व के तीर्थ स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने शिक्षा काल में जिन ग्रंथों का अध्ययन किया, उन ग्रंथों का सार गीता में समाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विद्यार्थी निराशा को अपने आप पर हावी न होने दें। जब निराश हो जाए तो राजनेताओं की तरफ देखें, वे बार-बार चुनाव लड़ते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। कई बार विद्यार्थी लक्ष्य प्राप्ति की दौड़ में पीछे रह जाते हैं तो उन्हें निराश नहीं होना चाहिए।

ग्लेशियर झील से 'तबाही' पर चेत गई मोदी सरकार

- बर्फीली बाढ़ से कभी न हो सिक्किम जैसी तबाही, ले लिया सबक
- मोदी सरकार ने शुरू किया बड़ा काम, परियोजनाओं की मैपिंग शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले साल सिक्किम में ग्लेशियल झील की बाढ़ की वजह से तबाही मची थी। करीब सौ लोग मारे गए थे और तीस्ता पनबिजली संयंत्र (हाइड्रो पावर प्लांट) पूरी तरह से तबाह हो गया था। इस घटना के बाद से केंद्र सरकार ने गंभीर ग्लेशियल झीलों और ग्लोफ के खतरे वाली पनबिजली परियोजनाओं और क्षेत्रों का पता लगाने और वैज्ञानिक तरीकों से इनसे निपटने पर ध्यान केंद्रित किया है। नए अध्ययनों से पता चला है कि ग्लोफ्स के खतरे वाली 47 परियोजनाओं में से 20 हिमाचल प्रदेश में हैं। इनमें एनएचपीसी की बैरा सियूल (180 मेगावाट), एसजेवीएन की नाथपा झाकड़ी (1,500 मेगावाट), प्राइवेट कंपनी की बुधिल (70 मेगावाट),

मलाणा (100 मेगावाट), करचम वांगतू (1,045 मेगावाट) और चंजू द्व (36 मेगावाट) जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाएं शामिल हैं। उत्तराखंड में भी ऐसी नौ परियोजनाएं हैं जो ग्लोफ के खतरे के साये में हैं। इनमें धौलीगंगा में स्थित एक परियोजना के साथ-साथ विष्णुप्रयाग और तपोवन विष्णुगाड जैसी परियोजनाएं शामिल हैं। जम्मू-कश्मीर में ऐसी पांच प्रॉजेक्ट्स हैं, जबकि अरुणाचल प्रदेश में ऐसी तीन परियोजनाएं हैं। सिक्किम में ऐसी पांच और परियोजनाएं हैं जिन्हें संवेदनशील माना जाता है। वहां 2023 में दक्षिण ल्होनाक ग्लोफ का कहर देखने को मिला था। ग्लोफ शमन के लिए रणनीतियां पर राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण समिति की कार्यशाला में साझा किए गए आंकड़ों से पता चलता है कि सिक्किम में हुई इस घटना के बाद से सभी छह प्रभावित राज्यों में मैपिंग का काम चल रहा है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 14 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

लाहौर के जहरीले धुएं से उत्तर भारत में धुंध-कोहरा

● अमृतसर में विजिबिलिटी 50 मीटर

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारत के प्रमुख राज्य पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश धुंध और कोहरे की चपेट में आ गए हैं। एयर क्वालिटी इंडेक्स बताने वाली एजेंसी के मुताबिक दोपहर 12 बजे तक दिल्ली, गाजियाबाद, नोएडा और फरीदाबाद में एक्यूआई 400 के पार रिकॉर्ड किया गया। भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक बुधवार सुबह 8.30 बजे तक अमृतसर में दृश्यता केवल 50 मीटर रही। हलवारा (लुधियाना) में 100 मीटर, सरसावां (सहारनपुर) में 250 मीटर, अंबाला में 300 और चंड़ीगढ़ में 400 मीटर के बाद दृश्यता नहीं थी।

भारत-चीन के बीच पेट्रोलिंग का पहला राउंड पूरा

● समझौते के बाद एलएसी पर शुरू हुई थी यह गश्त

पूर्वी लद्दाख (एजेंसी)। पूर्वी लद्दाख के भारत-चीन बॉर्डर पर भारतीय सेना की पेट्रोलिंग का पहला राउंड पूरा हो गया है। 1 नवंबर को गश्त डेमचोक और देपसांग इलाके में गश्त शुरू हुई थी। रक्षा सूत्रों के मुताबिक, दोनों

इलाकों में एक बार भारतीय सैनिकों और एक बार चीनी सैनिकों की तरफ से गश्त की जाएगी। पेट्रोलिंग के लिए सैनिकों की सीमित संख्या तय की गई है। ये संख्या कितनी है, इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में शादी की, लेकिन फेरे नहीं लिए

दूल्हा-दुल्हन बोले- हमारा विवाह अगले साल

कलेक्टर ने सीएमओ को दिया नोटिस, कहा जांच करें

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन जिले में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से हुई शादियों में एक जोड़े ने न तो फेरे लिए, न ही मंगलसूत्र पहनाने और मांग भरने की रस्म निभाई। सामूहिक विवाह सम्मेलन मंगलवार को देवउठनी ग्यारस पर नागदा के नरेंद्र मोदी खेल प्रशाल में हुआ था। दूल्हा - दुल्हन का एक वीडियो सामने आया है। वे कह रहे हैं कि उनकी शादी अगले साल फरवरी में होने वाली है। विधायक और नगर पालिका अध्यक्ष के कहने पर मंडप में बैठे। मामले में उज्जैन कलेक्टर नीरज सिंह खाचरोद नगर पालिका के सीएमओ घनश्याम माचार को नोटिस देकर जांच कराने की बात कही है।

इंदिरा भी स्वर्ग से लौट आएं तो अब नहीं ला पाएंगी '370'

शाह बोले-महाराष्ट्र में औरंगजेब फैन क्लब बना एमवीए

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार करते हुए होम मिनिस्टर अमित शाह ने महाविकास अघाड़ी पर तीखा हमला बोला।

उन्होंने कहा कि महा विकास अघाड़ी गठबंधन 'औरंगजेब फैन क्लब' में तब्दील होता जा रहा है, भाजपा का महायुति गठबंधन शिवाजी महाराज और सावरकर के आदर्शों पर चल रहा है। यही नहीं इस दौरान उन्होंने जम्मू-कश्मीर विधानसभा में आर्टिकल 370 बहाली की मांग को लेकर भी कांग्रेस पर निशाना साधा।

अमित शाह ने कहा, इंदिरा गांधी भी स्वर्ग से लौट आएं, तब भी कश्मीर में अनुच्छेद 370 बहाल नहीं किया जाएगा। राहुल गांधी पर तंज कसते हुए शाह ने कहा कि आपकी चौथी पीढ़ी आ जाए, तब भी मुसलमानों के लिए कोई आरक्षण नहीं होगा। उन्होंने

कहा कि मैंने पूरे महाराष्ट्र का दौरा किया है और विश्वास के साथ कह सकता हूं कि 20 नवंबर को विधानसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले महायुति को सफलता मिलेगी।

महाराष्ट्र की 'लाडली बहनें' भाजपा के साथ हैं। होम मिनिस्टर ने कहा कि महायुति की सरकार बनेगी और विधानसभा में उसे अब तक की सर्वाधिक सीटें मिलेंगी। अमित शाह ने कहा कि सुशील कुमार शिंदे गृह मंत्री रहते समय श्रीनगर स्थित लाल चौक जाने में डरते थे; उन्हें अब अपने नाती-पोतों के साथ वहां जाना चाहिए, वे सुरक्षित रहेंगे। अमित शाह ने कहा, सोनिया-मनमोहन की सरकार के 10 साल के दौरान पाकिस्तान से आतंकवादी आते थे।

टेलीकॉम इंजीनियर को घर में 6 घंटे कैद रखा

भोपाल में डिजिटल अरेस्ट की 4 दिन में दूसरी घटना, पुलिस ने किया रेस्क्यू

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 4 दिन के अंदर डिजिटल हाउस अरेस्ट की दूसरी घटना सामने आई है। साइबर क्रिमिनल्स ने टेलीकॉम कंपनी के इंजीनियर को 6 घंटे तक उनके ही घर में डिजिटली कैद रखा। उन्हें डराया और धमकाकर एक कमरे में निगरानी में रखा गया।

बुधवार दोपहर क्राइम ब्रांच ने उन्हें और उनके परिवार को घर से बाहर निकाला। इंजीनियर और उनका परिवार इस कदर घबराया हुआ था कि साइबर क्रिमिनल्स का वीडियो कॉल डिस्कनेक्ट होने के बाद भी वे घर से बाहर नहीं निकले। ठगों ने उनसे 24 घंटे उनकी निगरानी में रहने के लिए कहा था। उनके मोबाइल पर किसका कॉल आ रहा था, ठगों को इसका तक पता चल रहा था। इस वजह से वे किसी का कॉल उठा नहीं पा रहे थे। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया-करारिया के गायत्री नगर में रहने वाले प्रमोद कुमार (38) प्राइवेट टेलीकॉम कंपनी में फील्ड इंजीनियर हैं। मंगलवार शाम 4.15 बजे उनके मोबाइल पर कॉल आया। कॉल करने वाले ने खुद को ईओडब्लू का अधिकारी बताकर कहा कि आपके नंबर से अलग-अलग बैंक खातों में बड़े पैमाने पर ऑनलाइन रकम का लेनदेन हुआ है। आपका नंबर बंद नहीं होना चाहिए। मैं मुंबई से हूं। नंबर बंद करने की हालत में भोपाल से गिरफ्तारी का जाएगा। ठगों का प्रमोद के मोबाइल में सेव कई जानकारियां पहले से थीं।

दूसरे कॉल में मुंबई क्राइम ब्रांच का बताया-पहला कॉल डिस्कनेक्ट होने के कुछ ही देर बाद प्रमोद को दूसरे नंबर से वीडियो कॉल आया। कॉल रिसीव करते ही स्क्रीन पर पुलिस यूनिफॉर्म में तीन लोग दिखे। उन्होंने खुद को मुंबई क्राइम ब्रांच का अधिकारी बताया। कहा कि आपके नंबर से एक व्यक्ति से फिरौती मांगी गई है। प्रमोद ने अपना पक्ष रखना चाहा तो उसे धमकाया गया। कहा आपने जो जुर्म किया है, इसके लिए 3.50 लाख रुपए का फाइन और दो साल जेल की सजा है। प्रमोद की कंपनी के बॉस की सूचना पर पुलिस उनके घर पहुंची। इसके बाद उन्हें बाहर निकाला।

ठग बोले- भले आदमी हो, बचा लेंगे-ठगों ने प्रमोद से बातचीत करते हुए उनसे उनकी पूरी जानकारी हासिल की। इस बीच उनके मोबाइल पर वेटिंग पर जो कॉल आ रहे थे, वे भी ठगों को पता होते थे कि किसके कॉल हैं। इससे प्रमोद और भी घबरा गए थे। बचना चाहते हो तो हमारी निगरानी में 24 घंटे तक रहना होगा। इस पर उन्होंने ने हामी भर दी।

इंजीनियर के घर पहुंचे बॉस, पुलिस को दी सूचना-डर की वजह से बुधवार सुबह 11.30 बजे तक प्रमोद ने किसी का कॉल पिक नहीं किया। ऑफिस की मीटिंग भी अटेंड नहीं की। तब उनके बॉस प्रदीप ने उन्हें कॉल किए। कई कॉल करने पर भी उन्होंने कॉल को पिक नहीं की। तब प्रदीप अनहोनी की आशंका के चलते उनके घर पहुंचे। प्रमोद ने गेट खोलने से इनकार कर दिया।ऐसे में उनके बॉस ने भोपाल क्राइम ब्रांच को मामले की सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर प्रमोद को रेस्क्यू किया। उन्हें बताया कि उनके साथ फ्रॉड हो रहा था।

बहादुर बहनों का साहस और संघर्ष प्रेरणास्पद : मुख्यमंत्री

सीएम ने भेड़िए से संघर्ष करने वाली साहसी श्रीमती भुजलो बाई को स्वीकृत किए 1 लाख रूपए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने छिंदवाड़ा जिले के खकराचौरई गांव में भेड़िए का साहस से सामना करने वाली श्रीमती भुजालो बाई से वीडियो कॉल कर उनकी कुशलक्षेम पूछी। मुख्यमंत्री ने भुजलो बाई के साहस की सराहना करते हुए उन्हें मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान से एक लाख रूपए भी स्वीकृत किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बहादुर बहनों का साहस और संघर्ष प्रेरणास्पद है। श्रीमती भुजलो बाई के उचित इलाज के लिए कलेक्टर छिंदवाड़ा को निर्देशित किया गया है कि आवश्यक होने पर एयरलिफ्ट कर भोपाल में उपचार कराया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पीड़िता के परिजन से भी हाल-चाल जाने, साथ ही इलाज का पूरा खर्चा उठाने का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि वे शीघ्र पूर्णतः स्वस्थ हों, ईश्वर से यही प्रार्थना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल से कोटा रवाना होने से पहले मुख्यमंत्री निवास से श्रीमती भुजलो बाई से वीडियो कॉल कर चर्चा की।

उल्लेखनीय है की फसल की रखवाली के दौरान शुक्रवार की सुबह छिंदवाड़ा जिले के अमरवाड़ा रेंज के अंतर्गत खकरा चौरई गांव के पास खेत में 65 वर्षीय भुजलो बाई और 55 वर्षीय दुर्गाबाई सो रही थीं, तभी श्रीमती भुजलो बाई पर भेड़िए ने हमला किया और उनके एक हाथ का अंगूठा चबा लिया। चिल्लाने की आवाज आई तो दुर्गाबाई, भुजलो को बचाने पहुंची। भेड़िए ने भुजलो बाई के हाथ और सिर पर चोट पहुंचाई। आधे घंटे तक महिलाओं और भेड़िए के बीच संघर्ष चलता रहा। इसके बाद साहसी भुजलो ने पास रखे फावड़े से वार कर भेड़िए का अंत कर दिया। भेड़िए के हमले से घायल दोनों महिलाओं को जिला अस्पताल छिंदवाड़ा में भर्ती कराया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को बताया गया कि श्रीमती दुर्गाबाई का उपचार पूर्ण होने पर उन्हें जिला अस्पताल छिंदवाड़ा से डिस्चार्ज किया जा चुका है।

समता एक्सप्रेस में महिला की तबीयत बिगड़ी, मौत

बीना (नप्र)। समता एक्सप्रेस ट्रेन के जनरल कोच में सफर कर रही 40 साल की महिला की तबीयत बिगड़ गई, जिससे उसकी मौत हो गई। बीना रेलवे स्टेशन पर मंगलवार दोपहर 3.46 बजे शव को उतारा गया। 10 साल की बेटी मदद के लिए गुहार लगाती रही।

लोगों ने जीआरपी को भी इसकी सूचना दी, लेकिन 300 मीटर दूर जीआरपी थाने से स्टाफ को आने में डेढ़ घंटे से ज्यादा समय लग गया। इतनी देर तक शव वहां प्लेटफार्म पर ही पड़ा रहा। जीआरपी कर्मी शाम 5.20 बजे शव के पास पहुंचे और पंचनामा की कार्रवाई की।

ईसी ने अब सीएम शिंदे के सामान की ली तलाशी

● सीएम ने कसा तंज बोले-कपड़े हैं, यूरिन पॉट नहीं ● उद्धव ने जांच पर कहा था-यूरिन पॉट भी चेक कर लें

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पालघर में कोलगांव हैलीपेड पर बुधवार को इलेक्शन कमीशन के अधिकारियों ने सीएम एकनाथ शिंदे के सामान की चेकिंग की। अधिकारियों ने शिंदे के बैग, ब्रीफकेस और दूसरे सामान को जांचा। इसकी वीडियोग्राफी भी कराई गई। शिंदे ने अधिकारी से कहा- कपड़े हैं.. अधिकारी ने हां में सिर हिलाया। इसके बाद शिंदे ने कहा- कपड़े हैं, यूरिन पॉट बगैरह नहीं है। शिंदे का यह कमेंट उद्धव के बयान पर तंज माना जा रहा था। दरअसल, 11 और 12 नवंबर को हैलीपेड पर 2 बार उद्धव ठाकरे के भी सामान की जांच हुई थी। तब उद्धव ने इसका वीडियो शेयर किया था, जिसमें वह कहते नजर आ रहे थे- मेरा बैग चेक कर लीजिए।

चाहे तो मेरा यूरिन पॉट भी चेक कर लीजिए, लेकिन अब मुझे मोदी के बैग चेक करते हुए भी आप लोगों का वीडियो चाहिए। वहां आप अपनी पूंछ मत झुका देना। शिंदे के अलावा बुधवार को पुणे में केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले के हेलीकॉप्टर की भी जांच की गई। इससे पहले

मंगलवार को लातूर में ईसी ने नितिन गडकरी के बैग की चेकिंग की गई थी। महाराष्ट्र के दोनों डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार के हेलीकॉप्टर की भी बीते दिनों जांच हो चुकी है। बीजेपी ने आज ही फडणवीस के हेलीकॉप्टर जांच की वीडियो भी जारी किया। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के बैग की 12 नवंबर को लातूर में चेकिंग की गई थी। वे औसा विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी अभिमन्यु पवार का प्रचार करने पहुंचे थे।

कोलकाता रेप-मर्डर केस

गवर्नर हुए ऐक्टिव, ममता सरकार से मांगी रिपोर्ट

आरोपी संजय रॉय ने खुद को बेगुनाह बताया था, पूर्व कमिश्नर पर फंसाने के आरोप

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज रेप-मर्डर केस में आरोपी संजय रॉय ने पूर्व कमिश्नर पर खुद को फंसाए जाने के आरोप लगाए थे। इस मामले में पश्चिम बंगाल के गवर्नर सी वी आनंद बोस ने सीएम ममता बनर्जी से रिपोर्ट मांगी है। 11 नवंबर को सियालदह कोर्ट में पेशी के बाद संजय रॉय ने चीखते हुए मीडिया से कहा था कि उसे फंसाया गया है। कोलकाता के पूर्व पुलिस कमिश्नर विनीत गोयल ने उसके खिलाफ साजिश रची है। साजिश में दूसरे बड़े अफसर भी शामिल हैं। मामले में संज्ञान लेते हुए गवर्नर ने डीजी को जांच कर रिपोर्ट देने के आदेश दिए हैं। साथ ही सरकार का पक्ष भी बताने को कहा है। जूनियर डॉक्टरों की मांग के चलते विनीत गोयल को पद से हटा दिया गया है। ममता सरकार पर भी लगाए थे आरोप इससे पहले 4 नवंबर को संजय ने पहली बार ममता सरकार पर आरोप लगाया था। सियालदह कोर्ट में पेशी के बाद पुलिस जब संजय को बाहर लेकर निकली तो पहली बार वह कैमरे पर कहता नजर आया कि ममता सरकार उसे फंसा रही है। उसे मुंह न खोलने की धमकी दी गई है। सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन ने अपनी चार्जशीट में संजय रॉय को मुख्य आरोपी बताया है। इसके अलावा केस को गैंगरेप की बजाय रेप केस बताया है। चार्जशीट में यह भी कहा गया है कि पीड़ित के शरीर से मिला सीमन सैंपल और खून आरोपी से मैच हो चुका है।

मंच पर चुपचाप बैठे थे पीएम मोदी, अचानक पहुंचे मुख्यमंत्री नीतिश और छू लिया पैर

● पीएम मोदी ने दरभंगा में नए एम्स की नींव रखी, बिहार में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की उम्मीद

दरभंगा (एजेंसी)। बिहार को दूसरा एम्स मिल गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को दरभंगा में नए एम्स की नींव रखी। इस मौके पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार भी मौजूद थे। नीतिश कुमार ने इस अस्पताल के लिए पीएम मोदी का शुक्रिया अदा किया और कहा कि इससे राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांति आएगी। इस दौरान नीतिश कुमार ने एक बार फिर पीएम मोदी के पैर छूकर सबको चौंका दिया। दरभंगा में नए एम्स के बनने से बिहार के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलने की उम्मीद है। एम्स के शिलान्यास समारोह में नीतिश कुमार ने पीएम

मोदी की तारीफों के पुल बांध दिए। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए बहुत बड़ा दिन है। पीएम मोदी का धन्यवाद, जिन्होंने बिहार को यह तोहफा दिया। नीतिश कुमार पीएम मोदी के प्रति अपना सम्मान जताने से खुद को रोक नहीं पाए। कार्यक्रम के दौरान वो पीएम मोदी के पास गए और उनके पैर छू लिए।

'बुलडोजर' ऐक्शन पर अफसर नहीं बन सकते जज

● सुप्रीम कोर्ट बोला-प्रॉपर्टी तोड़ने से पहले 15 दिन का नोटिस जरूरी

● सख्त फैसला-अफसर दोषी हुआ तो निर्माण कराएगा, मुआवजा देगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। घर सबका सपना होता है, ये बरसों का संघर्ष है और सम्मान की निशानी। अगर घर गिराया जाता है तो अधिकारी को साबित करना होगा कि यही आखिरी रास्ता था। अफसर खुद जज नहीं बन सकते। बुलडोजर ऐक्शन पर फैसला सुनाते वक्त सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को यह कमेंट किया। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने बुलडोजर ऐक्शन पर पूरे देश के लिए 15 गाइडलाइन जारी कीं। अदालत ने कहा कि अगर घर गिराने का फैसला ले लिया गया है तो 15 दिन का समय दिया जाए। घर गिराने की कार्रवाई की वीडियोग्राफी जरूरी है। अगर कोई अफसर गाइडलाइन

का उल्लंघन करता है तो वो अपने खर्च पर दोबारा प्रॉपर्टी का निर्माण कराएगा और मुआवजा भी देगा। अपना घर हो, अपना आंगन हो, इस ख्वाब में हर कोई जीता है। इंसान के दिल की ये चाहत है कि एक घर का सपना कभी न छूटे। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में लगातार बुलडोजर ऐक्शन के बाद जमीयत-उलेमा-ए-हिंद ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी। आरोप लगाया था कि बीजेपी शासित राज्यों में

मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है और बुलडोजर ऐक्शन लिया जा रहा है। केंद्र सरकार ने दलील दी थी कि कोर्ट अपने फैसले से हमारे हाथ ना बांधे। किसी की भी प्रॉपर्टी इसलिए नहीं गिराई गई है, क्योंकि उसने अपराध किया है। आरोपी के अवैध अतिक्रमण पर कानून के तहत ऐक्शन लिया गया है।

हर आदमी का सपना एक घर, क्या छीन सकते हैं

जस्टिस बीआर गवई बोले,एक आदमी हमेशा सपना देखता है कि उसका आशियाना कभी ना छीना जाए। हर एक का सपना होता है कि घर पर छत हो। क्या अधिकारी ऐसे आदमी की छत ले सकते हैं, जो किसी अपराध में आरोपी हो। आरोपी हो या फिर दोषी हो, क्या उसका घर बिना तय प्रक्रिया का पालन किए गिराया जा सकता है।

राज्य निर्वाचन आयोग में नवनियुक्त नायब तहसीलदारों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

पर्यटकों की संतुष्टि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता : राज्य मंत्री श्री लोधी

● म.प्र.की सरकारी होटलों में मिलेंगे दाल-बाफले और दाल-पानिया ● साल भर खुला रहेगा हनुमंतिया, डेस्टिनेशन वैडिंग स्पॉट की तरह करेंगे डेवलप ● मुख्यमंत्री की मंशानुरूप 2047 का विज़न डॉक्यूमेंट करें तैयार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशानुरूप 2047 का विज़न डॉक्यूमेंट तैयार करें। विज़न डॉक्यूमेंट में पर्यटन गतिविधियों की विस्तार और निर्माण की योजना बनाएं, जिससे प्रदेश में पर्यटकों की संख्या बढ़ने के साथ साथ सभी पर्यटकों को उच्च श्रेणी का पर्यटन अनुभव भी मिले। यह निर्देश पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने पर्यटन राज्य विकास निगम में समीक्षा बैठक के दौरान दिए। राज्य मंत्री श्री लोधी ने कहा कि पर्यटकों की संतुष्टि हमारी सर्वोच्च प्राथमिका है। पर्यटकों के द्वारा दिए जा रहे रिव्यू का विशेष ध्यान दे। होटल में सुझाव के लिए बॉक्स रखें। अतिथियों की रिव्यू की मॉनिटरिंग के लिए स्टेट लेवल डैशबोर्ड बनाएं। पॉजिटिव रिव्यू को वेबसाइट पर प्रदर्शित करें । नेगेटिव रिव्यू को गंभीरता के लेकर होटल की सुविधाओं में सुधार करें।

राज्य मंत्री श्री लोधी ने निर्देश दिए कि होटल में स्थानीय व्यंजनों को परोसा जाए। क्षेत्रीय और स्थानीय व्यंजनों को मेनू में प्रमुखता से शामिल करे और प्रचारित करें। नर्मदापुरम में होने वाली रीजनल इन्वेस्टर समिट में अतिथियों को स्थानीय और मिलेट व्यंजन परोसे। प्रदेश में पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए होटलों की संख्या और कमरों में वृद्धि करें। पुराने होटलों का मूल्यांकन कर उन्हें रेनोवेट करने की योजना बनाए। कम ऑक्युपेंसी वाले होटलों और संपत्तियों के उचित निराकरण की योजना

बनाए। सैर-सपाटा के आवंटन की प्रक्रिया को एक माह में पूर्ण करें।

राज्य मंत्री श्री लोधी ने कहा कि हनुवंतिया प्रदेश का प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहां अधिक संख्या में होटल और रिजॉर्ट निर्माण की योजना बनाएं। इसके साथ अधिक से अधिक पर्यटन गतिविधियों का संचालन करें ताकि वर्षभर पर्यटक हनुवंतिया आ सकें। धार्मिक लोक के निर्माण और पर्यटन सुविधाओं के विकास कार्यों को प्रमुखता से समय सीमा में पूरा करे।

राज्य मंत्री श्री लोधी ने निर्देश दिए कि पर्यटन निगम के अधिकारी और कर्मचारियों की मृत्यु होने पर दी जाने वाली अनुग्रह सहायता राशि 50 हजार से दुगनी कर एक लाख रुपए की जाएं। राज्य मंत्री श्री लोधी को प्रेजेंटेशन के माध्यम से पर्यटन निगम की संपत्तियों, गतिविधियों, उपलब्धियों, नवाचारों के साथ अधिकारियों और कर्मचारियों की स्थिति से अवगत कराया गया।

इस अवसर पर प्रबंध संचालक राज्य पर्यटन विकास निगम श्री इलैया राजा टी. सहित पर्यटन निगम के अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रदेश के 22 जिलों के 200 छात्रावास एवं स्कूलों की मरम्मत एवं रेन वॉटर रूफिंग के लिये प्रस्ताव

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत होंगे विकास कार्य

भोपाल(नप्र)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि देश के सभी जनजातीय बहुल गांवों के समग्र विकास के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार प्रतिबद्ध प्रयास कर रही है। जनजातियों के विकास के लिये केन्द्र सरकार द्वारा धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान 5 वर्ष की अवधि के लिये है, जो वित्त वर्ष 2024-25 से वित्त वर्ष 2028-29 तक क्रियान्वित होगा। इसमें केन्द्र सरकार के 18 मंत्रालयों/विभागों की 25 प्रकार की जनकल्याणकारी योजनाओं/सेवाओं/सुविधाओं का चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वयन कर जनजातियों को सहज लाभ दिलाया जायेगा। उन्होंने बताया कि इस अभियान में प्रदेश के 51 जिलों के 267 विकासखंडों में स्थित 11 हजार 377 जनजातीय बहुल गांवों का सर्वांगीण विकास किया जायेगा। इस अभियान से इन 51 जिलों में 43 जनजातीय समुदायों के 18 लाख 58 हजार 795 परिवार निवास करते हैं, जिनकी कुल 93 लाख 23 हजार 125 लोग सीधे तौर पर लाभान्वित होंगे।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि अभियान में केन्द्र सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में स्थापित शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थाओं जैसे छात्रावास, आश्रम शालाएं एवं आदर्श विद्यालय, जेएसएस आदि के उन्नयन, विस्तार के साथ इन संस्थानों छत पर सोलर सिस्टम और रेन वॉटर रूफिंग आदि की स्थापना के लिये प्रस्ताव मांगे गये हैं। देशभर की कई संस्थाओं में इस प्रकार के विकास कार्य किये जाने हैं। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश सरकार ने इस दिशा में तेजी से कार्यवाही कर केन्द्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय के सचिव को वित्त वर्ष 2024-25 में प्रदेश के 22 जिलों में इस प्रकार के कार्यों के लिये अधिकृत प्रस्ताव भेज दिया है।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान में राज्य सरकार की ओर से केन्द्र सरकार को बालाघाट, छिंदवाड़ा, सतना, सीधी, हरदा, उज्जैन, धार, रायसेन, नर्मदापुरम, शहडोल, दतिया, इंदौर, सिवनी, रतलाम, उमरिया, बड़वानी, राजगढ़, मंडला, खरगोन, बैतूल, पन्ना एवं गुना जिले में स्थित कुल 200 छात्रावासों एवं स्कूलों की मरम्मत तथा इनमें रेन वॉटर रूफिंग की स्थापना के लिये 388 करोड़ 56 लाख रूपये के विकास कार्य प्रस्ताव भेज दिये गये हैं।

भोपाल में नौकर ने की मालिक की हत्या

मंगेतर पर नीयत खराब थी; अकेले में मिलने का बनाता था दबाव

भोपाल (नप्र)। गांधी नगर पुलिस ने दो दिन से लापता व्यक्ति की लाश मंगलवार की शाम को एयरो सिटी जे सेक्टर से बरामद की है। उसके सिर को पत्थर से कुचलकर मौत के घाट उतारा गया है। हत्या के आरोप में पुलिस ने मृतक के नौकर को गिरफ्तार किया है, आरोपी का साथी फिलहाल फरार है। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि हाल ही में उसकी सगाई हुई है, मालिक मंगेतर को उससे अकेले में मिलाने का दबाव बनाता था। पूर्व में तीन बार समझाइश दी लेकिन नहीं माना तो मौत के घाट उतार दिया।

एसआई अयाज चांदा ने बताया कि महेश मेहरा (55) ईटखेड़ी बैरसिया रोड का रहने वाला था। फेरी लगाकर बच्चों को झूला झुलाने का काम करता था, रघुवीर उर्फ राजा उसका नौकर था। वह बच्चों को झूले पर चढ़ाने और उतारने का काम करता था। आरोपी ने पुलिस को बताया कि दोस्त नरेंद्र के साथ मिलकर महेश की हत्या का प्लान बनाया था। रविवार को महेश को मिलने के लिए बुलाया, उसे शराब पिलाई। शाम के समय उसे एयरो सिटी के जंगल में ले गए। वहां सिर में पत्थर मारकर मालिक की हत्या कर दी। रघुवीर ने पुलिस को बताया कि हाल ही में उसकी सगाई हुई है।

अविवाहित था महेश- महेश अविवाहित था, उसकी नीयत नौकर की मंगेतर पर खराब हो गई थी। वह लगातार अकेले में मंगेतर से मिलाने का दबाव बनाता था। बात नहीं मानने पर मजदूरी का पैसा रोक लेता था। पहले भी तीन बार उसका इसी बात को लेकर महेश से विवाद हुआ। शनिवार को एक बार फिर महेश ने मंगेतर से अकेले में मिलाने की डिमांड की थी। तब उसने दोस्त के साथ मिलकर उसे रास्ते से हटाने का फैसला किया।

भाई बोला- जिसे हमने पाला, उसी ने भाई की हत्या कर दी- मृतक के छोटे भाई दीपक मेहरा ने बताया कि रघुवीर अहिरवार को भाई ने ही पाला था। बचपन से उसका ख्याल रखा, दस हजार रुपए महीने की तनख्वाह उसे दी जाती थी। उसी ने भाई की हत्या कर दी। उसकी नीयत झूले पर खराब थी। वह चाहता था कि भाई की हत्या के बाद झूला उसका हो जाए। इससे होने वाली पूरी कमाई भी उसी की हो जाएगी। हत्या के बाद पुलिस ने रघुवीर को गिरफ्तार कर लिया है। उसके साथी नरेंद्र की तलाश की जा रही है।

म.प्र. में जल्द एक और प्रशासनिक सर्जरी

प्रमुख सचिव, सचिव स्तर के अफसरों को मिलेगी नई जिम्मेदारी, कलेक्टर भी बदलेंगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में सोमवार रात एक साथ 26 अफसरों की तबादला सूची जारी की गई। नए मुख्य सचिव अनुराग जैन के पदभार ग्रहण (3 अक्टूबर) के बाद पहली बार आईएएस अफसरों का तबादला हुआ है। इस सूची में कई विभागों में अधिकारियों को अतिरिक्त प्रभार दिया गया। जबकि इन पदों के लिए फुल फ्लैश अफसरों की जरूरत है। ऐसे में अनुमान लगाया जा रहा है कि जल्द विभागीय अधिकारियों के अलावा 6 से अधिक जिलों के कलेक्टरों को बदला सकता है। अब तक सीएम सचिवालय में अपर मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव स्तर के 2 अफसरों की पोस्टिंग के चलते सीएम सचिवालय ही अब तक सारे फैसले कर रहा था। सोमवार को हुए पदस्थापना आदेश में अब सीएस आफिस और सीएमओ के बीच संतुलन बनाने के संकेत भी मिले हैं। इसीलिए दो प्रमुख सचिव सीएम सचिवालय से वापस विभागों को भेजे गए हैं।

यहां हो सकता है फेरबदल- प्रमुख सचिव उमाकांत उमराव को खनिज साधन विभाग का प्रमुख सचिव बनाने के साथ प्रबंध संचालक एमपी खनिज निगम और संचालक खनिकर्म भौतिकी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। यह पद सचिव और अपर सचिव स्तर के अधिकारियों को सौंपा जाएगा। राजस्व मंडल ग्वालियर के सदस्य पद से सचिव स्तर के अधिकारी नागर गोजे मदन विभीषण की भोपाल वापसी हुई है, इनके स्थान पर एक अधिकारी की जल्द राजस्व मंडल में पोस्टिंग की जाएगी। मनोज पुष्प संचालक पंचायत राज और सीईओ एमपी ग्रामीण आजीविका मिशन को आयुक्त सहकारी संस्थाएं की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पंचायत राज संचालक और सीईओ एमपी ग्रामीण आजीविका मिशन के पद पर नए अधिकारी की पोस्टिंग की जाएगी। वहीं आयुक्त सहकारिता की जिम्मेदारी निभा रहे मनोज सरियाम की पोस्टिंग भी सरकार ने अब तक नहीं की है। उन्हें नई जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। गिरीश शर्मा को अपर सचिव सामान्य प्रशासन विभाग से परियोजना संचालक स्किल डेवलपमेंट प्रोजेक्ट बनाया गया है। जीएडी में अपर सचिव की पोस्टिंग उनके स्थान पर की जाना बाकी है।

बदल सकते हैं कुछ जिलों के कलेक्टर- राज्य सरकार आने वाले दिनों में कुछ जिलों के कलेक्टरों को भी बदल सकती है। सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा का तीन साल का कार्यकाल पूरा हो चुका है। इसलिए वर्मा को नए जिले में जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। इसके अलावा नर्मदापुरम कलेक्टर सोनिया मीना को भी नए जिले में या विभागाध्यक्ष कार्यालय में पदस्थ किया जा सकता है।

वरिष्ठ नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बनाने में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी

अब तक 2 लाख से अधिक वरिष्ठ नागरिकों के बनाये जा चुके हैं आयुष्मान कार्ड

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रदेश में वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयुष्मान कार्ड निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति पर समस्त संलग्न अधिकारियों, आशा कार्यकर्ता, एएनएम एवं सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सराहना की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत सभी पात्र वरिष्ठ नागरिकों तक स्वास्थ्य सुरक्षा पहुँचाने के लिए संकल्पबद्ध है।वरिष्ठ नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बनाने में मध्यप्रदेश पूरे देश में अग्रणी है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी आयुष्मान भारत योजना डॉ योगेश भरसट ने बताया कि मध्यप्रदेश में 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के अब तक 2 लाख 667 आयुष्मान कार्ड बनाये जा चुके हैं। वहीं केरल में अब तक 1 लाख 76 हज़ार 167 कार्ड बनाए गए हैं।

डॉ. भरसट ने बताया कि मध्यप्रदेश में प्रतिदिन लगभग 30 से 35 हज़ार वरिष्ठ नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बन रहे हैं। डॉ भरसट ने बताया कि लक्षित 34 लाख 73 हज़ार 325 आयुष्मान कार्ड 15 जनवरी तक बना लिये जाएँगे। इसके लिए कार्ययोजना तैयार कर ली गयी है। आशा कार्यकर्ता, एएनएम और सीएचओ के द्वारा डोर टू डोर दस्तक दी जा रही है। विशेष कैंप आयोजित किये जा रहे हैं।

हितग्राही घर बैठे ही बना सकते हैं आयुष्मान कार्ड

सीईओ डॉ भरसट ने बताया कि आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत एक नई पहल शुरू की गयी है, जो 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को सुलभ एवं उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए समर्पित है। योजना का शुभारंभ 29 अक्टूबर 2024 को किया गया। उन्होंने बताया कि 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के पात्र वरिष्ठ नागरिक अब राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के पोर्टल या आयुष्मान ऐप के माध्यम से भी अपना पंजीकरण कर सकते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए वय वंदना कार्ड

डॉ. भरसट ने बताया कि वरिष्ठ नागरिकों को वय वंदना कार्ड नामक एक विशिष्ट कार्ड जारी किया जा रहा है। जो वरिष्ठ नागरिक 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के हैं और जिनके परिवार पहले से आयुष्मान भारत योजना के तहत कवर हैं, उन्हें इस कार्ड के माध्यम से अतिरिक्त 5 लाख तक की वार्षिक टॉप-अप कवरेज मिलेगी। यह टॉप-अप केवल वृद्धजनों के लिए है और परिवार के अन्य सदस्यों (जो 70 वर्ष से कम आयु के हैं) के साथ साझा नहीं किया जा सकेगा।

पहले से रजिस्टर्ड हितग्राहियों को वय वंदना कार्ड के लिये पुनः पंजीयन करना अनिवार्य

डॉ भरसट ने बताया कि पहले से रजिस्टर्ड आयुष्मान हितग्राहियों को वय वंदना कार्ड के लिए पुनः पंजीकरण करना होगा। वय वंदना कार्ड प्राप्त करने पर वरिष्ठ नागरिकों को 5 लाख का अतिरिक्त टॉप-अप मिलेगा, जिससे कुल 10 लाख तक का स्वास्थ्य कवरेज मिल सकेगा। यह अतिरिक्त टॉप-अप केवल वृद्धजनों के लिए ही होगा, जबकि परिवार के अन्य सदस्यों को पूर्व निर्धारित 5 लाख का कवरेज मिलेगा। 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के अन्य सभी वरिष्ठ नागरिकों को पारिवारिक आधार पर 5 लाख तक की वार्षिक कवरेज प्रदान की जाएगी।

अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य योजनाओं के लाभार्थी को एक विकल्प का करना होगा चयन

डॉ भरसट ने बताया कि जो वरिष्ठ नागरिक केंद्रीय सरकारी स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस), पूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ईसीएचएस), या आयुष्मान सीएपीएफ जैसी अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं, उन्हें अपनी मौजूदा योजना या आयुष्मान भारत योजना में से किसी एक का चयन करना होगा। निजी स्वास्थ्य बीमा योजना या कर्मचारी राज्य बीमा योजना में शामिल वरिष्ठ नागरिक भी आयुष्मान योजना के तहत लाभ ले सकेंगे।

ई-केवाईसी के लिये तीन माध्यम उपलब्ध

डॉ भरसट ने बताया कि वरिष्ठ नागरिकों की पहचान के लिए योजना में आधार कार्ड को मुख्य दस्तावेज माना गया है। ऐसे नागरिक जिनके आधार कार्ड में पूर्ण जन्मतिथि न होकर जन्मवर्ष है, उन्हें 1 जनवरी 2025 को आधार मानकर 70 वर्ष पूर्ण होने पर पात्र माना जायेगा। हितग्राहियों की पहचान के लिए थंब इम्प्रैशन, आईरिस स्कैन और मोबाइल ओटीपी तीन माध्यम का प्रावधान है, ताकि सहजता से हितग्राहियों का चिन्हांकन किया जा सके।

एअर इंडिया एक्सप्रेस का शेड्यूल जारी

बेंगलुरू और हैदराबाद के लिए फ्लाइट 15 दिसंबर से

भोपाल (नप्र)। राजा भोज एयरपोर्ट के लिए विंटर सीजन अच्छा होता नजर आ रहा है। इसका मुख्य कारण एअर इंडिया की सहयोगी एयरलाइन्स कंपनी एअर इंडिया एक्सप्रेस द्वारा आगामी 15 दिसंबर से भोपाल से बेंगलुरू और हैदराबाद के लिए फ्लाइट शुरू की जाएंगी। हालांकि इसी तारीख से कंपनी मुंबई के लिए भी फ्लाइट शुरू करने पर विचार कर रही है।

बेंगलुरू और हैदराबाद के लिए इन फ्लाइट्स के शुरू होने के बाद राजा भोज एयरपोर्ट से इन स्थानों के लिए फ्लाइट की संख्या क्रमशः तीन व दो हो जाएगी। वर्तमान में इंडिगो द्वारा बेंगलुरू के लिए सुबह-शाम और हैदराबाद के लिए सुबह के समय एक फ्लाइट चलाई जा रही है। एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी का कहना है कि कुछ और नए डेस्टिनेशंस के लिए विंटर सीजन में फ्लाइट्स बढ़ने की उम्मीद है।

विंटर में 13 डेस्टिनेशन...- वर्तमान में भोपाल से दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, हैदराबाद, बेंगलुरू, जयपुर, उदयपुर, रायपुर व लखनऊ के लिए फ्लाइट्स चलाई जा रही हैं। विंटर शेड्यूल में पुणे, गोवा, दतिया आदि नए डेस्टिनेशन होंगे। इस तरह भोपाल का कनेक्शन 12 शहरों से हो जाएगा। वहीं, राजा भोज एयरपोर्ट से दोनों तरफ आवागमन करने वाली फ्लाइट्स की संख्या 50 तक पर पहुंचने की उम्मीद है।

पिछली बार 32 फ्लाइट्स थीं- पिछले विंटर सीजन में दोनों ओर की मिलाकर 32 फ्लाइट्स थीं। इस बार अब तक यह संख्या 36 पर पहुंच चुकी है। एअर इंडिया एक्सप्रेस और इंडिगो की गोवा फ्लाइट को मिलाकर 15 दिसंबर तक यह संख्या 38 पर पहुंच जाएगी। जनवरी तक 50 फ्लाइट्स होने की उम्मीद है।

भोपाल के बरखेड़ी में बनेगी सबसे बड़ी गौशाला

5 हजार गोवंश एक साथ रखे जा सकेंगे; सीएम डॉ. यादव करेंगे भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। भोपाल से 20 किलोमीटर दूर बरखेड़ी अब्दुल्ला में जिले की सबसे बड़ी गौशाला बनाई जाएगी। यहां एक साथ 5,000 गोवंश रखे जा सकेंगे। इसके लिए सीएम डॉ. मोहन यादव भूमिपूजन करेंगे।

25 एकड़ में बनने वाली इस गौशाला को हाईटेक बनाया जाएगा, जिसमें सीसीटीवी कैमरों सहित वे सभी आवश्यक संसाधन होंगे जो सुरक्षा की दृष्टि से जरूरी हैं। इसकी लागत 10 करोड़ रुपए आएगी।

देवउठनी एकादशी पर गौशाला का भूमिपूजन होना था और सभी तैयारियां भी पूरी हो चुकी थीं, लेकिन सीएम का कार्यक्रम निरस्त हो गया। इसलिए भूमिपूजन कार्यक्रम को आगे टाल दिया गया। यह कार्यक्रम इसी सप्ताह हो सकता है।

कलेक्टर ने कराया था सर्वे, सड़कों पर मिले थे 5 हजार मवेशी- करीब ढाई महीने पहले कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने एक सर्वे कराया था जिसमें सड़कों पर आवारा मवेशी पाए गए थे। सर्वे में सड़कों पर 200 जगहों पर मवेशियों का डेरा दिखा, जिनकी कुल संख्या 6,000 के करीब थी।

अयोध्या बायपास, कोलार रोड, रायसेन रोड, अशोका गार्डन, रातीबड़, नेहरू नगर, कोटरा, बैरागढ़ और हमीदिया रोड पर बड़ी संख्या में मवेशी सड़कों पर नजर आए थे। बारिश के दौरान सड़कों पर मवेशियों की संख्या बढ़ने से नगर निगम की टीमें उन्हें पकड़कर बाहर खदेड़ रही थीं।

निगम के पास पर्याप्त इंतजाम नहीं, इसलिए सड़कों पर मवेशी

भोपाल में 6 से ज्यादा स्थानों पर गौशालाएं हैं, जिनमें कुछ की क्षमता 50 तो कुछ की 100 मवेशियों की है। पूरे शहर से पकड़े गए मवेशियों की किस गौशाला में देखभाल हो रही है, इसकी मॉनिटरिंग नहीं होती। इस वजह से कई बार मवेशी मालिक भी मवेशियों के लिए भटकते रहते हैं। ऐसे में एक ही स्थान पर सभी मवेशियों को रखे जाने से उनका रिकॉर्ड रखना और देखभाल करना आसान हो जाएगा। वहीं, निगम को भी बड़ी गौशाला मिल जाएगी। जहां पर सारे मवेशियों को ले जाया जाएगा।

भोपाल के मानस भवन में गीता सत्संग सप्ताह का समापन

स्वामीजी ने कहा- विचार प्रक्रिया को बदलना है असली अध्यात्म

भोपाल (नप्र)। तुलसी मानस प्रतिष्ठान और महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थान भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में मानस भवन के पं. रामकिंकर उपाध्याय सभागार में गीता सत्संग सप्ताह और उपनिषद चिंतन के समापन अवसर पर आयोजित विशेष संध्या में स्वामी अनुभवानंदजी ने गीता के महत्व पर प्रकाश डाला।

स्वामीजी ने अपने उद्बोधन में कहा, विचार प्रक्रिया को बदलना ही असली अध्यात्म है। भगवत गीता हमें यह समझाती है कि संसार में आते हुए हम सभी ईश्वर के अंश हैं। भले ही हम किसी के पिता, पुत्र या पति हों, लेकिन मूल रूप में हम भगवान के ही अंश हैं।

स्वामीजी ने गीता के प्रसंग में अर्जुन की स्थिति का उदाहरण देते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र के युद्ध भूमि पर अर्जुन मोह वश अपने रिश्तों में बंधकर कर्म से दूर हो गए थे, जबकि उसे अन्याय के

खिलाफ संघर्ष करना चाहिए था। उन्होंने यह भी बताया कि जब हम देहाभिमान से मुक्त होते हैं, तभी हम में ईश्वर की उपस्थिति प्रकट होती है। भगवान हमें ढूंढते हैं, जब हमारा अन्तःकरण पवित्र होता है और उसमें कोई विकार नहीं होता।

स्वामीजी ने आगे कहा, भगवान श्रीराम के अवतरण को गोस्वामी जी ने 'भये प्रगट कृपाला' कहा है। यह तब संभव होता है, जब हम संत महापुरुषों की वाणी को सुनें और अपने आचरण में उतारें। सत्संग में पूर्ण रूप से रुचि लें और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।

इस कार्यक्रम में रघुनंदन शर्मा कार्याध्यक्ष, प्रभुदयाल मिश्र, कैलाश जोशी, संजीव अग्रवाल, किरण अग्रवाल, मनीष गुप्ता, अनिल शर्मा सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन देवेन्द्र कुमार रावत द्वारा किया गया।

संपादकीय

मुस्लिम देशों की लामबंदी के मायने

गाजा और लेबनान पर इजराइली हमलों के खिलाफ सउदी अरब की राजधानी रियाद में 50 मुस्लिम देशों के राष्ट्राध्यक्षों का जमावड़ा इस बात का संकेत है कि इजराइल के खिलाफ इस्लामिक देशों को एकजुट करने की ईरान की पहल कुछ रंग लाने लगी है। खास बात यह है कि साल भर से गाजा और अब लेबनान में इजराइली सैनिक कार्रवाई को लेकर सऊदी अरब ने पहली बार खुलकर आलोचना की है। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सऊदी अरब के प्रिंस मोहम्मद बिन ने गाजा व लेबनान में इजराइल की सैन्य कार्रवाई को तुरंत रोकने की मांग की। यही नहीं आम तौर पर इजराइल के प्रति नरम रवैया रखने वाले प्रिंस ने इजराइली हमले को 'जनसंहार' क़रार दिया और स्वतंत्र फिलिस्तीन राष्ट्र की स्थापना की मांग की। क्राउन प्रिंस सलमान ने फ़िलस्तीन को एक स्वतंत्र देश का दर्जा देने की मांग करते हुए कहा कि हमने दो राष्ट्रों के सिद्धांत को समर्थन देने के लिए एक अंतरारष्ट्रीय अभियान शुरू किया है। उन्होंने कहा कि फिलिस्तीन के ख़िलाफ़ निरंतर अपराध, अल-अक्सा मस्जिद की पवित्रता के उल्लंघन और सभी फिलिस्तीनी इलाक़ों में फिलिस्तीनी अथॉरिटी की अहम भूमिका को ख़त्म करने की इजराइल की कार्रवाई फिलिस्तीनियों के सभी वैध अधिकार पाने की कोशिशों को कमज़ोर कर देगी। मोहम्मद बिन सलमान ने गाज़ा में फ़िलिस्तीनियों के लिए काम करने वाली यूएन की एजेंसी यूनाइटेड नेशन्स रिलीफ़ एंड वर्क्स फ़ॉर फ़िलिस्तीन यानी यूएनआरडब्लूए पर प्रतिबंध लगाने की भी निंदा की है। उन्होंने कहा कि सऊदी अरब ईरान पर इजराइल के किसी भी हमले की कोशिश को ख़ारिज करता है। इस सम्मेलन में फिलिस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास और तुर्की के राष्ट्रपति रेचप तैयप्प अर्दोआन ने भी भाग लिया। माना जा रहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के ठीक बाद आयोजित ये सम्मेलन गाज़ा और लेबनान में इजराइल की कार्रवाई रोकने के लिए दबाव बनाने की रणनीति है। इसमें ट्रंप की अहम भूमिका हो सकती है। समझा जा रहा है कि जनवरी में सत्ता संभालने के बाद ट्रंप इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पर युद्धविराम के लिए दबाव बन सकते हैं। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले देशों ने इजराइल-ग़ाज़ा समस्या को ख़त्म करने के एक 33 सूत्री हल पेश किया है, जिसमें फिलिस्तीनियों के प्रति समर्थन ज़ाहिर किया गया। साथ ही लेबनान, ईरानी, इराक़ और सीरिया की संप्रभुता के उल्लंघन की निंदा की गई। इसमें इजराइल-ग़ाज़ा संघर्ष को ख़त्म करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय से संयुक्त राष्ट्र के समाधानों और अंतरग्रीय कोर्ट के फ़ैसलों को लागू करवाने की अपील की गई है। एक बात साफ है कि अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद जहां ईरान सहमा हुआ है, वहीं इजराइल को पलटवार करने से रोकने के लिए पूरी ताकत लगा रहा है। ऐसे में अपने परंपरागत दुश्मन अरब देशों से हाथ मिलाने में भी उसे परहेज नहीं है। यहां सवाल यह है कि मध्य पूर्व के मामले में ट्रंप क्या रणनीति अपनाएंगे? वो इजराइल को ईरान पर वार करने की खुली छूट देंगे या फिर उसे युद्ध विराम के लिए मजबूर करेंगे? मुस्लिम देशों की अपेक्षा यही है कि ट्रंप इजराइल को हर हाल में रोकें। ट्रंप अरब देशों की कितनी सुनेंगे, कोई नहीं कह सकता। इजराइल और हमास के बीच मध्यस्थता की अभी तक की कोशिशें बेकार ही गई हैं। क्योंकि 53 हजार से ज्यादा फिलिस्तीनियों की मौत के बाद भी हमास न तो बंधकों को छोड़ने पर राजी है और न ही इजराइल उसके संपूर्ण खात्मे के संकल्प से पीछे हटा है। उल्टे वो कई मोर्चों पर ईरान के प्रॉक्सी से लोहा ले रहा है।

नजरिया

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बच्चों के प्रति जिम्मेदारियों का निर्वहन करे समाज

आज जो बाल साहित्य रचा जा रहा है, वह बाल मन, बाल समझ या बाल मानसिकता से काफी दूर नजर आता है। बच्चों के लिए ऐसे स्तरीय बाल साहित्य का सर्वथा अभाव खटकता है, जिसके जरिये बाल मन के सवालों के जवाब रचनात्मक साहित्य के जरिये बच्चों को रोचक तरीके से मिल सकें और वे अनायास ही ऐसे साहित्य की ओर उन्मुख होने लगें। आजकल बच्चों के लिए जो किताबें या पत्रिकाएं मिलती हैं, उनकी छपाई, सफाई और चित्रांकन तो बहुत सुंदर व आकर्षक होता है तथा ये पत्रिकाएं बहुधा रंगीन होती हैं, जिनके दाम भी बहुत ज्यादा नहीं होते लेकिन इनकी सामग्री उच्चस्तरीय नहीं होती। इन पत्रिकाओं में बाल पाठकों में नैतिक गुणों का विकास करने वाली सामग्री का अभाव अक्सर अखरता है।

देश में प्रतिवर्ष 14 नवम्बर को 'बाल दिवस' मनाया जाता है। सही मायनों में बाल दिवस की शुरुआत किए जाने का मूल उद्देश्य बच्चों की जरूरतों को पहचानना, उनके अधिकारों की रक्षा करना और उनके शोषण को रोकना है ताकि बच्चों का समुचित विकास हो सके। बाल दिवस का अवसर हो और बच्चों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा न हो, यह मासूम बच्चों के साथ नाइंसाफी ही होगी। हालांकि जब भी हम बच्चों के बारे में कोई कल्पना करते हैं तो सामान्य रूप से एक हंसते-खिलखिलाते बच्चे का चित्र हमारे मन-मस्तिष्क में उभरता है लेकिन कुछ समय से बच्चों की यह हंसी, खिलखिलाहट और चुलबुलापन भारी-भरकम स्कूली बस्तों के बोझ तले दबता जा रहा है।

पहले बच्चों का अधिकांश समय आउटडोर खेलों और गतिविधियों में ही बीतता था, हमउम्र बच्चों के बीच खेलकर उनका मानसिक एवं शारीरिक विकास भी तेजी से होता था लेकिन अब बच्चों के खेल घर की चारदीवारी में ही सिमटकर रह गए हैं। कोरोना महामारी के कारण लंबे समय तक बंद रहे स्कूलों ने तो बच्चों के मन-मस्तिष्क पर काफी बुरा प्रभाव डाला। ऑनलाइन पढ़ाई के कारण अधिकांश बच्चे उस दौरान घर की चारदीवारी में कैद होने के कारण मोबाइल फोन इत्यादि इलैक्ट्रॉनिक गैजेट्स के आदी हो गए। नतीजा, इंटरनेट पर ऊलजलूल कार्यक्रम देखकर और हिंसात्मक गेम खेलकर बच्चों में हिंसात्मक व्यवहार और आक्रामकता बढ़ रही है तथा तरह-तरह की बीमारियां भी बचपन में ही बच्चों को अपनी चपेट में लेने लगी हैं।

गहन चिंतन का विषय है कि हम और हमारा समाज भी बच्चों के प्रति सही तरीके से अपनी भूमिका का निर्वहन नहीं कर पा रहे हैं। बच्चों का मन बेहद कोमल और सरल होता है, जो प्राय: निस्वार्थ भाव से किसी की भी मदद करने को तैयार रहते हैं। हालांकि बच्चों को हम बचपन से ही ऐसी सीख देने का भरसक प्रयास करते हैं कि वे जीवन में एक अच्छे इंसान बनें लेकिन कई बार हम स्वयं ही अपनी कार्यशैली से उनके समक्ष अच्छा आदर्श स्थापित करने में विफल रहते हैं। वास्तविकता यही है कि बड़ों के मुकाबले बच्चों का मन इतना कोमल होता है कि वे किसी भी बात का दिल से बुरा नहीं मानते और कई मामलों में तो कुछ बच्चे ही अपने कारनामों से बड़ों को भी जीवन में बहुत कुछ सीखा जाते हैं। सही मायनों में हम बच्चों से ईमानदारी, छोटी-छोटी बातों में खुशियां ढूंढ़ना, किसी का दिल नहीं दुखाना, दिल में कोई खोट न रखकर दिल खोलकर हंसना, निस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करना, लग्न और मेहनत से जीवन में बड़े से बड़ा मुकाम हासिल करना जैसी बातें सीख सकते हैं। व्यस्कों को जहां प्रसन्न रहने के लिए किसी कारण की आवश्यकता होती है, वहीं बच्चों को दुखी होने के लिए एक कारण की जरूरत होती है लेकिन चिंता की बात यही है कि अब समाज बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सही प्रकार से नहीं कर पा रहा है।

जहां तक बच्चों के प्रति समाज की जिम्मेदारियों की बात है तो बाल साहित्य का मामला हो या बाल फिल्मों का, बच्चे सदैव ही उपेक्षित रहे हैं। प्रेम कहानियों और भूत-प्रेतों पर आधारित फिल्मों की तो हमारे यहां भरमार रहती है लेकिन कोई भी फिल्मकार अपने देश की बगिया के इन महकते फूलों की सुध लेना जरूरी नहीं समझता। जहां 'होम अलोन', 'चिकन रन' और 'हैरी पॉटर' जैसी विदेशी बाल फिल्में विदेशों के साथ-साथ भारतीय बच्चों द्वारा भी बहुत पसंद की जाती रही हैं, वहीं हमारे यहां ऐसी फिल्मों का सर्वथा अभाव रहता है, जिनसे बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन हो और उन्हें एक नई प्रेरणा एवं सही दिशा मिल सके। प्रेमकथा पर आधारित या हिंसा और अश्लीलता से भरपूर फिल्में बनाकर मोटा मुनाफा कमा लेने की प्रवृत्ति ने ही अधिकांश फिल्मकारों को बाल फिल्में बनाने की दिशा में निरूत्साहित किया है। बाल साहित्य के मामले में भी कुछ ऐसा ही हाल है। बच्चों के मानसिक और व्यक्तित्व विकास में बाल साहित्य की बहुत अहम भूमिका होती है। बच्चों में आज नैतिक मूल्यों का जो अभाव देखा जा रहा है, उस अभाव को प्रेरणादायक बाल साहित्य के जरिये आसानी से भरा जा सकता है किन्तु यदि कोई बच्चा आज स्कूली किताबों से अलग कुछ अच्छा साहित्य पढ़ना भी चाहे तो उसे समझ नहीं आता कि वह पढ़े तो क्या पढ़े क्योंकि बच्चों के लिए सार्थक, सकारात्मक और प्रेरक साहित्य की कमी अब बहुत अखरने लगी है।

आज जो बाल साहित्य रचा जा रहा है, वह बाल मन, बाल समझ या बाल मानसिकता से काफी दूर नजर आता है। बच्चों के लिए ऐसे स्तरीय बाल साहित्य का सर्वथा अभाव खटकता है, जिसके जरिये बाल मन के सवालों के जवाब रचनात्मक साहित्य के जरिये बच्चों को रोचक तरीके से मिल सकें और वे अनायास ही ऐसे साहित्य की ओर उन्मुख होने लगें।

आजकल बच्चों के लिए जो किताबें या पत्रिकाएं मिलती हैं, उनकी छपाई, सफाई और चित्रांकन तो बहुत सुंदर व आकर्षक होता है तथा ये पत्रिकाएं बहुधा रंगीन होती हैं, जिनके दाम भी बहुत ज्यादा नहीं होते लेकिन इनकी सामग्री उच्चस्तरीय नहीं होती। इन पत्रिकाओं में बाल पाठकों में नैतिक गुणों का विकास करने वाली सामग्री का अभाव अक्सर अखरता है। स्तरीय बाल साहित्य की कमी के भयावह दुष्परिणाम बच्चों में बड़ों के प्रति सम्मान की कम होती भावना और हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ते जाने के रूप में हमारे सामने आने भी लगे हैं। छोटे पर्दे पर प्रसारित हो रहे कार्टून चैनलों की बात करें तो अधिकांश कार्टून चैनल की कहानियां ऐसी होती हैं, जिनसे बच्चों को कोई अच्छी सीख मिलने के बजाय उनमें आक्रामकता की भावना ही विकसित होती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि मारधाड़ वाली फिल्मों और विभिन्न टीवी चैनलों पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के साथ-साथ ऐसे कार्टून नेटवर्क भी बच्चों में आक्रामकता बढ़ाने में ही अहम भूमिका निभा रहे हैं। इसके अलावा माता-पिता के बीच आए दिन होने वाले झगड़े भी बच्चों का स्वभाव उद्दंड एवं आक्रामक बनाने के लिए खासतौर से जिम्मेदार होते हैं। छोटी उम्र में ही बच्चों पर किताबों का बोझ भी अब इस कदर बढ़ गया है कि उन्हें अब पहले की भांति खेलने-कूदने के लिए भी पर्याप्त समय नहीं मिल पाता और भारी-भरकम स्कूली बस्तों के बोझ तले मासूम बचपन की मुस्कान दब रही है। आज के बच्चे ही कल के भारत का निर्माण करेंगे और हम जितने बेहतर तरीके से उनकी देखभाल करेंगे, राष्ट्र निर्माण भी उतना ही बेहतर होगा, इसलिए यह समाज का बहुत बड़ा दायित्व है कि वह बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का सही तरीके से निर्वहन करे।

स्मृति

वेद विलास उनियाल

(वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार)

शारदा सिन्हा-लोक परंपरा को सजाती रहेगी यह आवाज

शारदा सिन्हा लोक संस्कृति की मधुर अभिव्यक्ति थीं। सदियों से अगर भारतीय समाज में लोक संस्कृति मूल स्वरूप में है तो उसकी वजह यही रही है कि गीत संगीत कला के जरिए उसे अभिव्यक्त किया जाता रहा है। निश्चित ऐसे प्रयासों से जनमानस को अपनी परंपरा रिवाज पर्व त्यौहारों को समझने जानने का अवसर मिलता रहा है। लोक संगीत का माधुर्य और माटी की सुगंध का एहसास करना हो तो शारदा सिन्हा के गीतों में इसका अहसास होता है। उनकी आवाज में खास खनक थी।

शारदा सिन्हा ने लोक पर्वों को और उत्सवी रूप दिया। एक तरह से उन्होंने अपने लोकगायन से लोगों को लोकपर्व से जोड़ा। लोक संस्कृति से विमुख होते समाज को उनके गायन फिर अपनी जड़ों से लौटने के लिए प्रेरित किया। लोकभाषा के जरिए सामान्य लोक जीवन में प्रचलित विश्वास आस्था परंपरा के विषय ही लोक संस्कृति है। मैथिली और भोजपुरी के लोकजीवन में शारदा सिन्हा के गीत गूंजे। समाज मंत्रमुग्ध हुआ। खासकर छठ मइया के उनके गीत लोकजीवन में छा गए। शारदा सिन्हा जिस तरह अपनी माटी के गीतों में रची बसी थी वैसे ही सादगी उनके जीवन में भी देखने को मिली। शास्त्रीय और लोक संगीत में सजा उनका गायन लोगों को मंत्रमुग्ध करता रहा। मैथिली और भोजपुरी गीतों को उन्होंने पूरे मनोभाव से गाया। उनके गीत समाज की धरोहर बन गए। देश विदेश में अपार लोकप्रियता के बावजूद उन्होंने हमेशा अपना देशज जीवन अपनाए रखा। उनके गीतों के साथ उनकी छवि मन में उतरती है तो माथे पर लाल बिंदी गले में माला के साथ पूरे व्यक्तित्व में सादगी। उन्हें बिहार की स्वर कोकिला कहा गया। शारदा सिन्हा के गीतों में एक अलग तरह की अनुभूति देखने को मिली।

भारतीय लोक संस्कृति में बिरले कलाकारों ने अपनी अनूठी छाप छोड़ी। विविधता वाले इस देश में अलग अलग संस्कृति परंपरा पर लोकगीतों को गाने वालों ने अनूठी छाप छोड़ी। कुछ ऐसे विरले कलाकार भी रहे रहे जिन्होंने लोकजीवन के श्रेष्ठ गीत रचे और गाए लेकिन लोग उन्हें जान नहीं पाए। बस उनके रचे गीत आने वाली पीढ़ियां गुनगुनाती रही। लेकिन यह सौभाग्य है कि शारदा सिन्हा ने जो कुछ रचा गाया उसे समाज महसूस करता है। बिहार के लोकपर्व छठ को शारदा सिन्हा ने अपने गीतों से इस तरह सजाया कि उनके गीत इस पर्व का एक जरूरी अंग हो गए। असम की संस्कृति के वाहक भूपेन हजारिका बने। वहीं मैथिली संस्कृति के गीत संगीत की बात हुई तो शारदा सिन्हा के गीत उसके प्रतीक बने। खासकर छठ का पर्व में जितने जरूरी उसके कठिन विधि माने गए उतना जरूरी छठ मइया में शारदा जी के गीत भी माने गए। कौन होगा जिसने छठ पूजा की हो और शारदा जी के सोना सटकोनिया हो दीनानाथ की अर्चना न सुनी हो। हम ना जाईब दूसरा घाट, केलवा के पात पर उगलन सूरज मल झांके झुके, सुना छठी माई पहिले पहिल छठ मइया, देखब हे छठि मइया हमहु अरगिया जैसे गीत परंपरा के गीत बन गए। उनकी आवाज में दर्द, कसक वेदना प्रेम ईश्वर के प्रति समर्पण हर भाव दिखा। गीतों को उन्होंने गाया ही नहीं बल्कि गीतों में वह समा गईं। गीत उनके लिए वंदना की तरह थे। गीतों में उन्होंने अर्चना का भाव तलाशा। हालांकि उनकी आवाज छठ की आवाज थी। शारदा सिन्हा बिहार के उस सुपौल में जन्मी जो मत्स्य क्षेत्र कहलाता है। आम भी खूब होता है। लेकिन, कोसी की बाढ़ यहां के जीवन को प्रभावित करती है। कोसी मैया की अर्चना भी होती है। लेकिन जीवन चलता रहता है। यही के हुलास गांव में जमींदार परिवार में जन्मी शारदा सिन्हा को संगीत का ऐसा लगाव हुआ कि वह इसमें ही रम गईं। मीठा स्वर और खनक में कुछ गाती तो लोगों को अच्छा लगता। मैथिली और भोजपुरी की यह आवाज भारत की सीमाओं से पार भी जाएगी। वहां जहां मॉरीशस है, गुयाना सूरीनाम है पोर्ट ऑफ स्पेन है। कहां कहां नहीं बसे हैं बिहार के लोग। जहां भी यह आवाज गूंजेगी हर सुनने वाले को प्रभावित करेगी। हुआ भी यही। उन्होंने मैथिली भोजपुरी गायन को करियर बनाया। गुरु पन्ना देवी के सानिध्य में शास्त्रीय संगीत

लोक संगीत को सीखा समझा। वह लोकसंगीत में शास्त्रीयता को लाकर उसे आकर्षक बनाया। दरभंगा के ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय से संगीत में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। साथ ही लोक गायिका के रूप में भी प्रसिद्धी पाती रही। उन्होंने बसंत ऋतु की थीम पर गायन किया।

मॉरीशस के पूर्व प्रधानमंत्री रामगुलाम जब अपने पूर्वजों की भूमि को देखने आए तो उस भूमि में शारदा के गीत उनके स्वागत के लिए थे। शारदा सिन्हा के संगीत यात्रा में सब कुछ सहज नहीं हुआ। कई तरह के विरोध उन्होंने भी झेले। पहला कार्यक्रम दिया तो गांव वालों को एतराज हुआ कि गांव की बेटी स्टेजों में नाचेगी गाएगी। पिता सुखदेव ठाकुर ने किसी की नहीं सुनी और बेटी को गायिकी में पारंगत होने का पूरा अवसर दिया। यह सुखद संयोग था कि शादी के बाद पति बृजकिशोर सिन्हा ने भी उन्हें गायकी के लिए प्रोत्साहित किया। अजब था कि जो लोग उनकी गायन संगीत पर नाराज रहते थे उन्होंने जब जै जै भैरवी असुर भयावनी गीत सुना तो उन्हें देवी कहकर भी पुकारा।

शारदा सिन्हा के गायन में वो खनक थी कि केवल मैथिली और भोजपुरी समाज तक ही उनके गीत नहीं पहुंचे। जिन्हें भोजपुरी मैथिली नहीं आती थी उन्होंने भी अनुवाद करके उनके गीतों को सुना। वजह यही थी कि जब भी उन्होंने कोई गीत गाया तो उसका अर्थ भले ही एक पल समझ न आया पर वो टीस और करुण पुकार का अहसास सुनने वालों ने किया। कई लोग ऐसे मिल जाएंगे जो कहते हैं कि उन्होंने शारदा जी के गीतों को सुनकर मैथिली भोजपुरी सीखी। शारदा सिन्हा खासकर छठ गीतों की प्रतीक बनी। बिहार की लोक परंपरा में छठ पर्व खास महत्व रखता है। छठ पर्व के लिए शारदा जी हर बार कोई न कोई गीत जरूर रिकार्ड कराती रहीं। इस बार भी जबकि वह कैंसर की बीमारी से असहनीय दुख झेल रही थी तब भी उनका एक गीत सामने आया 'दुखवा मिटाई छठी मइया।' वह हमेशा कहती थी छठ के गीत ही उनका अर्घ्य है। शारदा सिन्हा ने गायन क्षेत्र की हर विभूति का सम्मान किया। लताजी के गीतों को वह बहुत मन से सुनती थीं। बिहार की लोक गायन के लिए ही नहीं बल्कि उसे संकलित करने और लड़कियों के लिए विंध्य कला मंदिर की स्थापना करने वाली विंध्यवासिनी देवी और अपनी गुरु पन्ना देवी से वह अभिभूत रही। इन कलाकारों को शारदा सिन्हा ने अपनी प्रेरणा माना।

शारदा सिन्हा के गायन का फिल्म जगत ने बहुत सीमित उपयोग किया। नब्बे के दशक में 'मैंने प्यार किया' में उनका गाया गीत 'कहे तोसे सजना' बहुत चर्चित हुआ था। 'मैंने प्यार किया' में शारदा जी का गीत तो बहुत मशहूर हुआ पर उन्हें उतनी शोहरत नहीं मिली, जिसकी वे हकदार थी। गैंग्स ऑफ वासेपुर टू, हम आपके हैं कौन जैसी चर्चित फिल्मों में भी उन्होंने गीत गाए। लेकिन, उनके गाए गीत सीमित ही कहे जाएंगे। मुंबई की फिल्मों में लोकजीवन का और समावेश होता तो शारदा सिन्हा के लिए बार बार पुकार होती। शारदा जी इस दुनिया में नहीं रही। उनके अनमोल गीत हमारी लोक संस्कृति की धरोहर बन गए हैं। यह हमारी समृद्ध विरासत का हिस्सा बन चुका है। भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया था। लोगों से उन्हें जो अपार प्रेम स्नेह मिलता था। उसे वह अपनी मूल्यवान संपदा मानती थी। उन्होंने भक्ति की लौ जगाई। आस्था के प्रति लोगों को जगाया। उन्होंने पहिले पहल छठ मइया गाकर लोगों से अपनी माटी की सुगंध और घर लौटने का संदेश दिया। लोकपरंपरा रिवाजों के प्रति सजग किया। अक्सर लोग भावुकता में कह देते हैं कि शारदा सिन्हा मिथिला की बेगम अख्तर हैं। बेगम अख्तर ने गजल ठुमरी दादरा गाकर दुनिया को मंत्रमुग्ध किया तो शारदा सिन्हा ने पूर्वांचल के गीतों खासकर छठ गीत गाकर जनमानस को भावविभोर किया। दोनों का अपनी अपनी विधा का ऊंचा आकाश है। दोनों समतुल्य हैं। बेगम अख्तर की आवाज में गहराई थी तो शारदा जी की आवाज में खनक थी। बेगम अख्तर की गायकी सुनने वालों को मंत्रमुग्ध करती थीं तो शारदा सिन्हा के गीतों में कसक है। दोनों की गायकी में दर्द था, अहसास था एक गहरी टीस थी। एक ने प्रेम वियोग और जीवन के सार को सुनाया दूसरे ने लोकपर्व को सजाया। बेगम अख्तर ने जो गाया वो भी अमर अजर है। और शारदा जी की वाणी में जो कुछ गूंजा वो अपनी जगह। संगीतकार खय्याम ने जिन गजलों को बेगम अख्तर से गवाया वो लाजवाब है। वो जो हममे तुममे करार था, मेरे हमनफस मेरे हमनवा, ये मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया, कोयलिया मत कर पुकार जैसी बेगम अख्तर याद की जाएगी तो हो दीनानाथ, छठी मैया आई ना दुआरिया हम न जाईब दूसर घाट, पहिले पहिले छठ मइयां, दुखवा मिटाई छठी मईया, कहे तोसे सजना जैसे गीतो के साथ शारदा जी हमेशा लोगों के मन में रहेंगी। इस बार की छठ पर भी शारदा जी का गीत गूंज रहा था सोना सटकोनिया हो दीनानाथ। और सुनने वाले मायूस थे। जान रहे थे कि शारदा जी अब नहीं रहीं।

बिकता साहित्य या साहित्य में बिके हम

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

साहित्य शब्द सुनकर ही मन में उल्लास और जिज्ञासा उत्पन्न होने लगती है। कुछ नया जानने को मिलेगा, कुछ नया सीखने को मिलेगा। लेकिन आजकल जिस प्रकार से साहित्य को महसूस ना करके उसका बाजारीकरण किया जा रहा है। यह सच में चिंता का विषय है। साहित्य में ग्लैमर का मतलब है, कि आप अब बाज़ार का हिस्सा बन चुके है। जहां (जो दिखता है वह बिकता है) का सिदांत लागू होता है। आखिर साहित्य को बेचने के लिए ग्लैमर की नौबत आई ही क्यों? यह प्रश्न अपनेआप में ही चिंता का विषय है। यदि हमें साहित्य के मेलों में भी लोगों को आकर्षित करने की होड़ लगानी पड़ें, तो ज़रा सोचिए की साहित्य किस हाशिए पर है। हिन्दी साहित्य हमेशा से ही अपने भीतर एक युग को सम्माहित करते हुए समाज को आईना दिखाने का काम करता रहा है। लेकिन अब शायद समाज साहित्य से स्वयं को दूर करके बाहरी चमकदमक को ही सच मानने लगा है।

इसी का परिणाम है कि सोशल मीडिया की बदौलत बिना कोई विशेष काम किए भी शोहरत को हासिल करके साहित्य के मेलों में ऐसे चेहरों को देखना पड़ रहा है जिनका साहित्य तो दूर पढ़ाई-लिखाई से भी कुछ लेना देना नहीं लगता। आखिर साहित्यिक मेलों में ऐसे चेहरों को बुलाकर बिठाना, जिनपर टिकटें बिके, क्या आयोजक स्वयं ही साहित्य को गौण नहीं मान रहे? या यह सच में गौण किया जा रहा है। जिन साहित्यिक मेलों का वर्ष भर इंतज़ार रहता है। उनमें लेखकों, आलोचकों या पाठकों की जगह भीड़ को आकर्षित करने के तामझाम किए जाए तो उन साहित्यिक मेलों का हिन्दी साहित्य में या किसी भी भाषा के साहित्य में क्या प्रभाव पड़ेगा, इस बात से या तो आयोजक अनजान है या फिर उन्हें इस बात से फर्क नहीं पड़ता। दोनों ही नजरों में प्रश्नचिंह साहित्य पर ही है।

हम सब यह बात मानते है कि समय ङ्क समय पर हिन्दी साहित्य में भी परिवर्तन होना चाहिए। लेकिन वह परिवर्तन भाषा-शैली, या साहित्य में लोगों की रूचि को कैसे बढाए, इन बातों पर होना चाहिए ना की साहित्य को इतना दयनीय ही मान लो की इसे बेचा कैसे जाए, इस बात पर साहित्य का निर्णय होने लगे। पुरानी रुढ़िवाद से हटकर वैज्ञानिकता का दामन थाम कर समाज को नई और उर्जावान दिशा बताना ही साहित्य का मकसद होना चाहिए। पर आजकल तो साहित्य को ही रास्ता दिखाया जा रहा है। दबे शब्दों में यह कहने का प्रयास किया जा रहा है कि साहित्य को सुनने लोग कम आते है, इसलिए ग्लैमर का तड़का लगाया जा रहा है। यह कौन लोग है जो किस्से - कहानियों के बीच फूहड़पन को पसंद कर रहे है। और यदि कर रहे है तो वह साहितिय्क आयोजनों के लायक ही नहीं है।

कहने को बहुत कुछ है पर जितना लिखेंगे उतना ही दुःख होगा, कि क्या समय अ गया है कि जो साहित्य हमें रास्ता दिखाता रहा है, आज उसको बचाने के लिए गुहार लगानी पड़ रही है। क्षमता सिर्फ साहित्य में ही यह हमारे लिए शर्मनाक वाकया है। बस यही अनुरोध करना चाहती हूँ कि जीवन को वास्तविकता से परिचय कराने की क्षमता सिर्फ साहित्य में ही है। असंख्य ग्रन्थों में से कुछ को ही अगर हम अपने जीवन का हिस्सा बना लेंगे तब जान पायंगे कि हमारे पास साहित्य के रत्नों का अनमोल खजाना है। जिस दिन हम साहित्यिक मेलों को बेचने की जगह उनके अर्थ को समझने लगेंगे, तब हमें इसकी टिकटों को बेचने के लिए किसी बनावटी चेहरे की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

पूरन सरमा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

किस्सा मेरी बीमारी का!

बीमार तो मैं भी हुआ था, वह भी घनघोर रूप से। सरकारी अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने कमीशन के कैप्सूल दिये, जिससे मेरे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और हारकर मुझे एक प्राइवेट अस्पताल की शरण में जाना पड़ा। वहाँ का डॉक्टर बहुत भला था, डेढ़ इंच मुसकान उसके होंठों पर स्थायी रूप से चिपकी हुई थी, उसकी उसी मुसकान से मेरा आर्थिक कत्ल हुआ। मैंने अस्पताल में बताया कि मैं एक साहित्यकार हूँ, इसलिए इसके बदले आप कुछ कंसीडर कर सकते हैं तो अवश्य करें, परन्तु अस्पताल के डॉक्टर की मुसकान मुझे साहित्यकार जानकर हंसी मैं बदल गई। उसी हंसी के बीच उसने मुझसे कहा भी कि वे अच्छा ट्रीटमैंट देंगे। मैंने अपनी बीमारी की बात मीडिया में फैलानी चाही तो मुझे कोई प्रवक्ता नहीं मिला। जो लोग मेरा हाल-चाल पूछने आ रहे थे, उनसे भी कहा कि साहित्य अकादमी तक मेरी बीमारी की खबर पहुंचाओ, लेकिन परिणाम निकला ढ़ाक के तीन पात। चूंकि मैं गंभीर रूप से बीमार था तो शुरू में आई.सी.यू. में रखा गया। लेकिन वह आई.सी.यू. क्या था, हर ऐरा गैरा नत्थू खैरा उसमें धडल्ले से घुस आता था वैसे कोई ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं थी, बस चंद पड़ोसी और रिश्तेदार एक बार औपचारिकता पूरी कर अन्तर्ध्यान हो गये थे। साहित्यकार ज्यादा नहीं आये, उसकी वजह थी खेमेबाजी। हालांकि मैं किसी खेमे में नहीं था, लेकिन अब साहित्यकारों को कौन समझाये कि हारी-बीमारी में खेमेबाजी नहीं चला करती।

डॉक्टर ने ही आठ दिन बाद बताया कि पेट में जो दर्द है, वह अयेंडेसाइटिस का है। इसलिए आपरेशन करना होगा। मैं क्या करता, मजबूर था। पत्नी से सलाह की, वह बेचारी बेहाल थी और चिंतित भी। बोली-'घबराओ मत, मेरे गहने कब काम आयेंगे, आपरेशन तो कराना ही है।' डॉक्टर ने रातों-रात हजारों रूपये लेकर मेरा आपरेशन कर दिया। मेरे स्वास्थ्य बुलेटिन की चिंता न अस्पताल को थी और न जनता को इसकी आवश्यकता। इसलिए यहां भी मेरी तीस साल की साहित्य सेवा कोई काम नहीं आई। परिचर्चा के लिए पत्नी, बेटा और दो अदद बेटियाँ करती रहीं सारी भाग-दौड़। उधर अस्पताल प्रशासन हर तीसरे दिन हजार दो हजार मांग लेता वह अलग। दवायें बाजार से आ ही रहीं थीं। डॉक्टरों के हर राउंड की फीस अलग थी। लेकिन यह सब मेरी पहुंच के बाहर था। मैं बिस्तर पड़ा अक्सर यही सोचा करता कि गरीबी कितना बड़ा अभिशाप है। थोड़ा ठीक हुआ तो मुझे जनरल वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया, जहाँ पूरा हॉल शोर-शराबे की चपेट में था। परन्तु मैंने आर्थिक भार की कमी को ध्यान में रखकर राहत की साँस ली।

मेरे लिए प्रार्थना और दुआ मांगने वाले भी मेरे परिवारजन ही थे। इस मुफ्त के काम में भी साहित्य सेवा और देश कोई काम नहीं आया। न कोई बुके लाया न गुलदस्ते। बस पत्नी दोनों वक्त दलिया लेकर आती थी। न अस्पताल के बाहर भीड़ थी और न मिलने वालों का तांता। बल्कि अस्पताल से छुट्टी मिलती देख लोगों ने आना-जाना और बंद कर दिया। उन्हें आशंका थी कि इस महंगे इलाज के लिए मैं उनसे कोई राशि उधार न मांग लूं। लेकिन पत्नी के भीतर असीम आत्मविश्वास था। वह मुझे हौंसला देती रहती थी। एक-दो प्रकाशकों को रॉयल्टी के लिए टेलीफोन भी करवाये, लेकिन उनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। हाँ गुप्ताजी जरूर आये थे। परन्तु वे भी खाली हाथ। उन्होंने मेरे सामने पुस्तक व्यवसाय के चौपट होने का रोना रोया और बताया कि किताब छापना बेकार तथा घाटे का सौदा हो गया है। उसके बाद वे भी गायब हो गये।

अस्पताल से छुट्टी हो गई और मैं आ गया। सब काम ठीक-ठाक निपट गया था। दर्द था तो इतना सा था कि बीमार पड़ो तो शहंशाह बनकर वरना यों बीमार होने में धरा क्या है? इस देश में मूर्धन्य साहित्यकार निरे हो गये और मर गये। कुछ भी तो नहीं हुआ, तो यह किस्सा है मेरे बीमार होने का। बताइये साहित्यकारी कहाँ काम आई? मौलिक एवं अप्रकाशित व्यंग्य है।

जवाहरलाल नेहरू का समाजवाद

जयंती विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

जवाहरलाल नेहरू की पढ़ाई लंदन स्थित हैरो पब्लिक स्कूल और ट्रिनिटी कॉलेज केंब्रिज से हुई थी। वे केंब्रिज से 1912 में भारत लौट आए। इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत प्रारंभ कर दी। इसी वर्ष बांकीपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में बतौर प्रतिनिधि नेहरू ने सार्वजनिक जीवन में पहला कदम रखा। इसी अधिवेशन में नेहरू गोखले से मिले और उनके दृढ़ व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। इसी समय लोकमान्य तिलक और श्रीमती ऐनी बेसेंट ने दो अलग-अलग होमरूल संगठन स्थापित किए थे। नेहरू दोनों संगठनों के सदस्य बन गए लेकिन श्रीमती ऐनी बेसेंट के संगठन में उन्होंने कुछ काम भी किया। 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में नेहरू ने गांधी जी को पहली बार देखा और वे उनके मुरीद हो गए।इंग्लैंड के अपने शैक्षणिक प्रवास के समय नेहरू को जिस राजनीतिक संस्कृति का परिचय हुआ था उसके लोकतांत्रिक और स्वतंत्र माहौल ने उनके मन को प्रभावित किया था। लेकिन उन्हें यह एहसास था कि स्वतंत्र हुए बिना भारत में यह माहौल कभी भी उपलब्ध और विकसित नहीं हो पाएगा। दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के बाद गांधी ने किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति और समस्याओं से निबटने के लिए आंदोलन प्रारंभ कर दिए थे। नेहरू चंपारण,खेड़ा और अहमदाबाद के आंदोलनों को देख रहे थे और गांधी की कार्यशैली को समझ रहे थे जो कांग्रेस की कार्यशैली से बिलकुल अलग थी। गांधी समस्याओं के समाधान के लिए लोगों को संगठित कर रहे थे। नेहरू गांधी की कार्यशैली से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। जिस प्रकार से किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चंपारण की वस्तुस्थिति से अवगत कराया और वे उन्हें वहां लेकर गए उसी प्रकार से जून 1920 में इलाहाबाद शहर में किसानों ने एक विरोध प्रदर्शन रैली निकाली थी जिसमें दो सौ किसान प्रतापगढ़ से पचास मील चलकर इलाहाबाद आए थे। यहां उनके नेताओं ने नेहरू से मुलाकात की और उन्हें अपने क्षेत्र में आने का निमंत्रण दिया जिसे नेहरू ने स्वीकार किया और उन्होंने देहातों का दौरा किया। इस दौरान किसानों ने नेहरू को राजस्व विभाग के अधिकारियों और जमींदारों की निर्दयता और शोषण की बात बतायी। शहर से आए नेहरू की ओर किसान बड़ी उम्मीद से देख रहे थे लेकिन शहर में किसानों की समस्याओं और उनकी वास्तविक स्थिति के बारे में बहुत जानकारी नहीं थी और न ही यह बात शहर के लोगों के विचार विमर्श का हिस्सा थी। जिस प्रकार से गांधी अपने गुरु की आज्ञा के अनुसार भारत को देख व समझ रहे थे। नेहरू भी पहली बार उस भारत को उसके दर्द उसकी तकलीफों को देख रहे थे जिससे वे अब तक अनजान थे इसका जिक्र वे अपनी आत्मकथा में भी करते है। इस किसान आंदोलन से नेहरू का सामाजिक प्रशिक्षण हो रहा था वे लोगों से मिल रहे थे ,सार्वजनिक भाषण दे रहे थे और उन्हें जान समझ रहे थे। नेहरू ने उत्तर प्रदेश में लगान बंदी का आंदोलन भी चलाया। नेहरू कांग्रेस में किसानों और काश्तकारों के पक्ष से लड़ रहे थे। किसानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नेहरू ने 1936 के कांग्रेस अधिवेशन में जो महाराष्ट्र के फैजपुर में हुआ था अपने अध्यक्षीय भाषण में स्पष्ट कर दिया था उन्होंने कहा था कि "प्रचलित व्यवस्था को बदलना पड़ेगा और काश्तकार किसान और सरकार के बीच के मध्यस्थ को हटाने के लिए प्रयास करने पड़ेंगे। खेती पर उसे जोतने वालों का अधिकार हो न जोतने वाले जमींदारों का नहीं यह वर्ग समाप्त हो जाए। इस अधिवेशन में प्रोफेसर एन.जी.रंगा की अखिल भारतीय किसान सभा की मांगों का समर्थन किया गया और कांग्रेस ने अधिकृत रूप से कृषि संबंधी सुधारों के कार्यक्रम को स्वीकार किया। 1933 में नेहरू ने "Whither India" शीर्षक से एक लेख श्रृंखला लिखी थी जिसमें उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का वैश्विक संदर्भ बताते हुए उसके उद्देश्य क्या हों इसके बारे में अपना मत जाहिर किया था और उसी के साथ भारतीय संदर्भ में भी प्रश्न

उठाए थे। उन्होंने लिखा था कि "हम जो स्वतंत्रता हासिल करेंगे,वह किस वर्ग के लिए होगी? हम किसान, मजदूर जैसे बहुजनों को प्राथमिकता देंगे या कोई छोटा-सा वर्ग स्वतंत्रता का लाभ उठाने की दृष्टि से हमारी प्राथमिकता में सबसे ऊपर होगा? मेरे मन में यह बात साफ है कि अगर हित संबंधी लोगों को ही सत्ता का लाभ मिलने वाला है, तो फिर आने वाली स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता की परछाई भी नहीं होगी"। 1925 से 1929 तक चले मेरठ षड्यंत्र मुकदमे में नेहरू को भी बतौर अभियुक्त फंसाने का प्रयास किया गया था महज इसलिए कि वे कांग्रेस नेताओं की परवाह किए बिना लगातार समाजवादी विचार प्रस्तुत कर रहे थे लेकिन उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं मिले थे। 1934 में नासिक जेल में कैद कुछ समाजवादी विचारधारा के कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस पार्टी के अंतर्गत ही अलग समाजवादी गुट स्थापित करने का निर्णय लिया। 1934 में समाजवादी गुट की स्थापना की गई और 1935 में मेरठ में गुट का अधिवेशन भी हुआ। इस अधिवेशन के लिए नेहरू को भी आमंत्रित किया गया था लेकिन वे नहीं गए। अधिवेशन के लिए उन्होंने शुभकामनाओं का संदेश अवश्य भेजा। नेहरू के मन में समाजवादियों के प्रति आत्मीयता थी और उसी प्रकार समाजवादी गुट को भी नेहरू से काफी उम्मीदें थीं। 1936 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद नेहरू ने जो कार्यकारिणी गठित की उसमें आचार्य नरेंद्र देव,जयप्रकाश नारायण और अच्युतराव पटवर्धन का समावेश किया था। बोल्सेविक पार्टी द्वारा सत्ता पर कब्जा किए जाने की दसवीं बरसी पर नेहरू बर्लिन से रेलगाड़ी द्वारा 7 नवंबर 1927 को रूसी सीमा में दाखिल हुए थे। रूस में उस समय 'लेनिन की पूजा' व्यापक स्तर पर की जा रही थी। नेहरू ने मास्को की यात्रा भी की। मास्को शहर की भव्यता और सामाजिक एकरूपता ने उन्हें खासा प्रभावित किया। उन्होंने लिखा कि 'अत्यधिक गरीबी और अत्यधिक सुख-सुविधा के बीच का फर्क यहां नहीं दिखता,न ही वर्ग या जाति का पदानुक्रम यहां दिखता है'। नेहरू ने वहां के आदर्श कारागार का दौरा भी किया जो समाजवादी शासन में 'बेहतर सामाजिक व्यवस्था और मानवीय आपराधिक कानून' का एक अच्छा उदाहरण था। नेहरू ने पाया कि दूसरे बुर्जुआवादी देशों की तुलना में सोवियत संघ अपने श्रमिकों, किसानों,महिलाओं, बच्चों और यहां तक कि कैदियों से भी बढ़िया सलूक करता है। सोवियत संघ के अपने यात्रा-वृतांत में नेहरू ने फ्रांस की क्रांति के संबंध में वर्ड्सवर्थ की लिखी उन पंक्तियों को शामिल कर उनके ऊपर सोवियत शासन के पड़नेवाले असर का साफ संकेत दिया है। वर्ड्सवर्थ ने फ्रांस की राज्यक्रांति के बारे में लिखा था कि 'उस सुबह में जिंदा रहना सौभाग्य था लेकिन उस वक्त युवावस्था में होना किसी स्वर्गीय अनुभूति से कम नहीं था'। सोवियत आर्थिक व्यवस्था ने नेहरू को सबसे अधिक प्रभावित किया था। अपने समकालीन प्रगतिशील बुद्धिजीवी के तौर पर उनके विचार में निजी संपत्ति और बाजारवादी व्यवस्था की तुलना में सरकारी नियंत्रण और योजनागत विकास ज्यादा न्यायपूर्ण था। नेहरू द्वारा लिखी गई किताब "विश्व इतिहास की झलक" में भी सोवियत की पंचवर्षीय योजनाओं की काफी तारीफ़ करते है। लेकिन इतने पर भी वह सशस्त्र विद्रोह कर सत्ता पर कब्जा करने के बोल्सेविक तौर-तरीकों या एक पार्टी व्यवस्था की तरफ आकर्षित नहीं हो पाए। गांधी के अधीन उनके राजनीतिक प्रशिक्षण ने उन्हें अहिंसा का कट्टर समर्थक बना दिया था, जबकि पश्चिमी उदारवाद से परिचित होने की वजह से वे चुनावी लोकतंत्र और एक स्वतंत्र प्रेस के प्रति जबरदस्त उत्साहित थे। 1955 में नेहरू ने एक बार फिर सोवियत संघ का दौरा किया। एक पर्यवेक्षक ने लिखा कि 'नेहरू जहां भी गए...लोगों की विशाल भीड़ ने उनका स्वागत किया। सभी कारखानों में हजारों की संख्या में श्रमिक उन्हें देखने के लिए जमा हो गए,मॉस्को यूनिवर्सिटी के छात्रों ने अपनी कक्षाएं छोड़ दीं और उन्हें सुनने के लिए उमड़ पड़े'।(उनमें से एक छात्र मिखाईल गोर्बाचोव थे जिन्होंने सालों बाद अपने संस्मरण में लिखा था कि किस तरह नेहरू के नैतिक राजनीति के विचार ने उन्हें प्रभावित किया था)। नेहरू के लिए समाजवाद एक तरफ़ उत्तम और वांछित समाज का मानक था जिससे उन्हें वर्गविहीन, लोकतांत्रिक और मानवीय संभावनाओं के समग्र प्रतिनिधित्व की गारंटी होती हुई लगती थी। दूसरी तरफ वे मानते थे कि सामाजिक विश्लेषण की वैज्ञानिक विधि भी समाजवाद के पास है। नेहरू पूंजीपति वर्ग को हिंसक तरीकों से उखाड़ फेंकने के खिलाफ थे और न ही उन्हें सर्वहारा की तानाशाही में यकीन था,इसलिए उन्हें अपने समाजवादी आग्रहों को लोकतंत्र की सीमाओं के साथ समायोजित करना पड़ा। 1954 से लेकर 1964 अपने निधन तक नेहरू के लिए समाजवाद का मतलब मुख्यतः पब्लिक सेक्टर के प्रभुत्व वाली नियोजन आधारित मिश्रित अर्थव्यवस्था ही रही।

पर्यावरण के लिए 'ग्रीन इलेक्शन' कितना जरूरी

चुनाव आयोग इलेक्शन को इको फेंडली करना चाहता था। यह शब्द थोड़ा कठिन है और इसे लोग कम समझते हैं। इसलिए आयोग ने इको फेंडली का नाम बदलकर 'ग्रीन इलेक्शन' रख दिया। यह चुनाव आयोग की ही कल्पना है। इस बारे में आयोग की तरफ से 2024 और उससे पहले के चुनावों के दौरान भी गाइडलाइन जारी हुई। आशंका तो ईवीएम मशीन या इसके कवर को लेकर भी है कि इससे भी पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है!

पर्यावरण संरक्षण

नवीन कुमार

(वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक)

दुनिया के किसी भी देश में कोई भी चुनाव हो उससे पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव को लेकर एक अध्ययन किया गया, उसमें चौंकाने वाली बात सामने आई थी। चुनाव प्रचार के लिए उम्मीदवारों ने जो हवाई यात्राएं की वो एक साल के लिए 500 अमेरिकियों के पर्यावरण बोझ के बराबर था। पर्यावरण को हुआ यह नुकसान सुर्खियों में था। इसी तरह से चुनाव के दौरान भारत में भी पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है। क्योंकि, उम्मीदवार हेलीकॉप्टर और गाड़ियों पर तूफानी दौरे करते हैं। सड़कों पर फ्लेक्स, कटआउट, होर्डिंग्स और प्लास्टिक की प्रचार सामग्री से पर्यावरण को सुरक्षित रखना मुश्किल हो रहा है। इसलिए भारत का निर्वाचन आयोग ग्रीन इलेक्शन पर जोर दे रहा है।

महाराष्ट्र में इस समय विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं। आयोग ने ग्रीन इलेक्शन के लिए मुंबई के दो विधानसभाओं अणुशक्ति नगर और चेंबूर को चुना है। ये दोनों विधानसभा चुनाव क्षेत्र अल्पसंख्यक बहुल हैं और इसमें से चेंबूर का नाम पहले से ही सबसे ज्यादा प्रदूषित औद्योगिक समूहों में शामिल है। क्योंकि, राष्ट्रीय रसायन एवं उर्वरक (आरसीएफ) परिसर से अमोनिया और नाइट्रस ऑक्साइड का अनियंत्रित रिसाव होता है। डंपिंग ग्राउंड देवनार भी यहां पर है। अणुशक्ति नगर खूबसूरत पहाड़ियों से घिरा जरूर है। लेकिन, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम, निर्माण सेवा और संपदा प्रबंधन निदेशालय, परमाणु ऊर्जा शिक्षा सोसायटी का आवासीय टाउनशिप इसी इलाके में है। अणुशक्ति नगर और चेंबूर में ग्रीन इलेक्शन के लिए यूपी कैडर के आईएएस अफसर डॉ. हीरा लाल पर्यवेक्षक के तौर पर काम कर रहे हैं। बस्ती जिले के किसान परिवार से आने वाले डॉ. लाल ने बांदा जिले में कलेक्टर के रूप में काफी सकारात्मक काम किया है। इस समय वे ग्रीन इलेक्शन के साथ गांधीजी के ग्राम स्वराज्य पर आधारित मॉडल गांव पर भी काम कर रहे हैं। ग्रीन इलेक्शन के लिए उन्होंने मुंबई से पहले पंजाब के 6 आनंदपुर साहिब लोकसभा चुनाव क्षेत्र के रोपड़ में प्रयोग किया था। इसमें उन्हें काफी सफलता मिली थी और मतदान का प्रतिशत भी बढ़ा था।

अब अणुशक्ति नगर और चेंबूर में उसी प्रयोग को दोहराया जा रहा है। दरअसल आयोग की तरफ से चुनाव की तैयारी से लेकर चुनाव कराने तक और राजनीतिक पार्टियों के चुनाव प्रचार के दौरान कुछ इस तरह की गतिविधियां होती हैं जिससे कार्बन डाइऑक्साइड पैदा होता है जो वातावरण को खराब करता है यानी कि पर्यावरण बिगड़ता है। इसलिए चुनाव के दौरान कुछ ऐसा करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है ताकि इलेक्शन की वजह से कार्बन पैदा न हो। इसमें खासकर सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग को रोका जा रहा है और मतदान के नाम पर हर व्यक्ति या हर वोटर से एक पौधा लगाने की बात की जा रही है। मुंबई जैसे शहर में पौधा लगाना एक समस्या है। क्योंकि, यहां जगह की कमी है। इसलिए लोगों से कहा जा रहा है कि वे अपने घर में गमले में पौधा लगाएं। गमले के ये पौधे चुनाव की वजह से जो

कार्बन पैदा होगा उसे कम करेंगे। ग्रीन इलेक्शन का मकसद भी यही है कि चुनाव की वजह से जो कार्बन पैदा हो उसको किसी तरह से खत्म करना है।

कठिन है और इसे लोग कम समझते हैं। इसलिए आयोग ने इको फ्रेंडली का नाम बदलकर 'ग्रीन इलेक्शन' रख दिया। यह चुनाव आयोग की ही कल्पना है। इस बारे में आयोग की तरफ से 2024 और उससे पहले के चुनावों के दौरान भी गाइडलाइन जारी हुई। आशंका तो ईवीएम मशीन या इसके कवर को लेकर भी है कि इससे भी पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है? इस आशंका को दूर करते हैं डॉ लाल। उनकी समझ है कि ग्रीन इलेक्शन से ईवीएम मशीन का कोई लेना देना नहीं है। क्योंकि, ईवीएम से कार्बन उत्सर्जन का कोई लगाव या पोट्रेट नहीं है। जहां तक ईवीएम मशीन के कवर की बात है तो इसका कवर सॉलिड है। यह सिंगल यूज के लिए नहीं है। बाद में जब यह टूट जाता है तो बड़े साइंटिफिक तरीके से इसका रीसाइकिल किया जाता है।

ग्रीन गैस रीसाइकिल इस तरीके से किया जाता है कि ग्रीन गैस नहीं होता है। काफी सकारात्मक सोच के साथ ग्रीन इलेक्शन पर काम किया जा रहा हैं। क्योंकि, ग्रीन इलेक्शन का मुद्दा अभी नया है। लोगों को अभी इसके बारे में पता नहीं है। इसलिए इसको लेकर बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से लोगों की मानसिक स्थिति, उसकी विचारधारा और विश्वास को बदलने का काम किया जा रहा है। पंजाब के रोपड़ यह प्रयोग काफी सफल रहा है और गर्मी के मौसम में भी लोगों ने 50 हजार से ज्यादा पौधे लगाए। बाद में जब बरसात हुई तो पौधे बड़े हुए। इसी तरह से लोगों के व्यवहार में बदलाव को प्रोत्साहित किया जा रहा है और लोग अच्छी तरह से इसे स्वीकार कर रहे हैं। इससे मजबूती से जुड़ रहे हैं। फिलहाल कितने पौधे लगे इस पर अभी ध्यान देने के बदले लोगों की सोच बदलने पर जोर दिया जा रहा है। अगर लोगों के दिमाग में यह आइडिया घुस गया तो यह भी एक बीज की तरह ही काम करेगा और कभी न कभी लोग पौधा लगाएंगे।

वैसे भी, ग्रीन इलेक्शन को हर पांच साल में होने वाले लोकसभा या विधानसभा चुनावों तक ही सीमित नहीं रखा जा रहा है। देश में हमेशा कोई न कोई चुनाव होता रहता है। इसलिए हर एक्शन और एक्टिविटी में ग्रीन इलेक्शन का प्रयोग किया जा रहा है। यह ग्रीन इलेक्शन ऐसा है जिसके लिए किसी भी तरह के अतिरिक्त फंड की जरूरत नहीं है। क्योंकि, चुनाव के लिए मैटेरियल का पैसा मिलता ही है। इस पैसे को मैटेरियल और प्लास्टिक बदलने पर खर्च किया जाता है। डॉ लाल जैसे पर्यवेक्षक का भी उत्साह इसलिए बढ़ा हुआ है कि उनके प्रयास से लोगों में पौधा लगाने की भावना पैदा हो रही है। यह सकारात्मक परिणाम है। इसी का नतीजा है कि पिछले लोकसभा चुनाव में हर विधानसभा क्षेत्र में दो से पांच फीसद तक वोट का प्रतिशत बढ़ा। यह प्रयोग के तौर पर चल रहा है। मुंबई में भी पहला प्रयोग है। फिलहाल यहां इसकी गति थोड़ी धीमी है। लेकिन प्रयास जारी है।

अब नेहरू को सिर्फ जानना नहीं, समझना भी जरूरी

जयंती पर विशेष

प्रदीप मिश्र

लेखक पत्रकार हैं।

प्रसिद्ध तंत्रिका विज्ञानी सिगमंड फ्रायड की मान्यता थी कि एक दिन वर्षों का संघर्ष बहुत खूबसूरत तरीके से तुमसे टकराएगा। यह मनोविश्लेषण, तर्क और विवेचना आजादी के अमृतकाल में अकाट्य सिद्ध हो रही है। इसमें पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के प्रति बदनीयती, विद्रूपता, विद्वेष और वैचारिक बदसूरती छिप नहीं रही है। नवनिर्माण के एक कालखंड की सूचनाओं, परंपराओं, प्रवृत्तियों, घटनाओं और उपायों पर अभिमान के बजाय इन्हें झुठलाने की साजिश अभियान के रूप में हो रही है। इतिहास को विस्मृत कर स्वयं की सर्वश्रेष्ठता का अहम जताने-इठलाने की कोशिश जारी है। ऐसे में संसदीय लोकतंत्र, आर्थिक सहभागिता, आंतरिक और बाह्य समन्वय, वैश्विक संतुलन और सामाजिक समरसता समझने के लिए नेहरू और उनके कार्यकाल की वास्तविकता जानना प्रासंगिक हो गया है। वाद, विवाद और संवाद से समाज को समझने का मंतव्य, पराकाष्ठा के स्तर के प्रयत्न, प्रबंधन और परिश्रम के बूते ही भारत की पृथक पहचान है। स्वातंत्र्य योद्धाओं का त्याग-बलिदान, स्वाधीन भारत के सीमित संसाधनों में सतत साधना और शांति प्रयासों का योगदान है।

नेहरू दार्शनिक और व्यावहारिक राजनीतिज्ञ थे। राष्ट्रवाद, समाजवाद, संस्कृति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और संसदीय लोकतंत्र पर उनके विचार सुविचारित और स्पष्ट थे। वैचारिक विविधता, वैज्ञानिक मानवतावाद और साम्यवादी चिंतन उनके लिए देश के नवनिर्माण के मानक थे। वह सभी विचारधाराओं और धर्म को साथ लेकर चलते थे। 19वीं-20वीं सदी के उनके इतिहास बोध ने ही पूर्ण स्वराज्य और भारत के भविष्य की अधारभूत कल्पना की थी। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के समय अशिक्षा, गरीबी, जाति-धर्म के आधार पर विभाजन और असमानता के बीच महाशक्तियों में शीत युद्ध की समस्याएं भी थीं। आजादी के बाद नेहरू ने विश्व के राजनयिक परिदृश्य के मुताबिक बातचीत कर विकास को गति दी। पंचवर्षीय योजनाएं उनका ही विचार थीं। सोचिए, भाखड़ा नागल और रिहंद बांध उनकी आलोचना का आधार है? आईआईटी और आईआईएम किसके लिए बने? गुट निरपेक्ष आंदोलन की ताकत क्या जी-20 और ब्रिक्स से ही नहीं, नाटो और मौजूदा यूरोपीय यूनियन से कम थी?

गुट निरपेक्ष आंदोलन को नेहरू ने उसी दौर में सकरात्मक शक्ति और संतुलन का केंद्र बनाया था, जब किसी सबल देश का अनुसरण दासत्व के भाव से किया जाता था। नेहरू का नजरिया आयातित नहीं था। वह संकल्प और संघर्ष से हासिल स्वाधीनता के स्वप्निल आकार को धरातल पर आकार देना चाहते थे। इसीलिए उनके लिए समाजवादी, वामपंथी और भारतीय भावनाओं के साथ परंपरागत दर्शन और विचारों को समझना और उसे मध्यमार्ग में राष्ट्रहित-जनहित के लिए ढालना आसान रहा। वह पूंजीवाद के विरोधी नहीं थे लेकिन अच्छी तरह जानते थे कि इसे अधिक प्रोत्साहन से गरीब और मध्य वर्ग की देश की तरक्की में हिस्सेदार होने की आकांक्षा को आघात लगेगा। सार्वजनिक उद्यम, जिन्हें विनिवेश के बहाने आज भी टुकड़ों-टुकड़ों में बेचा जा रहा है, नेहरू के औद्योगिकीकरण और जनभागीदारी की सोच का ही प्रतिबिंब हैं। उन्होंने सबके सहयोग से

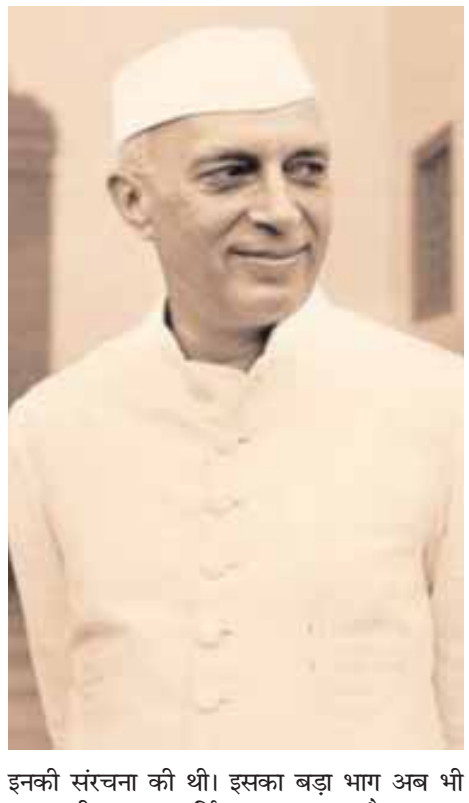

इनकी संरचना की थी। इसका बड़ा भाग अब भी भारत की सशक्त आर्थिकता का आधार है। महारत्न, नवरत्न और मिनी रत्न के इतिहास की भूमिका को पढ़ेंगे तो जानेंगे।

नेहरू साम्राज्यवाद और फासीवाद दोनों को पतनोन्मुख पूंजीवाद के दो चेहरे मानते थे। उन्होंने दोनों के खिलाफ संघर्ष को राष्ट्रीय आंदोलन का बुनियादी लक्ष्य बताया। नेहरू के कई समकालीन नेता उनसे बेहतर दृष्टि रखते थे लेकिन नेतृत्व क्षमता सिर्फ नेहरू में थी, इसलिए वह ज्यादातर समस्याओं के संधान में सफल होते थे। 1919 से 1921 तक उत्तर प्रदेश के अवध में किसान आंदोलन के नेतृत्व से उनकी नैतिकता और निपुणता सिद्ध हो चुकी थी। हालांकि 1950 में बतौर प्रधानमंत्री उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खां के साथ अल्पसंख्यकों का पलायन रोकने और अधिकारों के संरक्षण का समझौता किया किंतु 1952 में लियाकत अली की हत्या के कारण उस पर अमल नहीं हो सका। उलटे पाकिस्तान ने इसी दौरान जम्मू-कश्मीर के मुद्दे का अंतरराष्ट्रीयकरण कर दिया। 1954 में चीन के साथ तिब्बत के सवाल पर पंचशील समझौता भी असफल रहा, जबकि 1960 में चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई के साथ उनकी बातचीत अपने ही सहयोगियों के दबाव और आलोचना के कारण आगे नहीं बढ़ पाई। दरअसल, दोनों पड़ोसियों से दोस्ती के पीछे उनकी सोच थी कि भौगोलिक रूप से निकट निवासियों के साथ रहने की अनिवार्यता नहीं बदली जा सकती, इसलिए उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व बनाए रखना ही समझदारी है।

इतिहास बताता है कि मानमर्दन उनका होता है, जो स्वयं के संघर्ष को ही सर्वोपरि मानते हैं। समाज को संशय में डाल कर अल्पकाल के लिए तो यह सुविधा हासिल की जा सकती है पर समय की कसौटी पर मार्गदर्शक माने जाने वालों की विश्वसनीयता का ह्रास भी होता है। व्यक्तिगत आक्रमण उसी अवस्था में किए जाते हैं, जब व्यवस्थागत और बुनियादी तंत्र में सुधार के मार्ग में व्यवधानों और बाधाओं की सम्यक समझ का सीमांकन हो जाता है। अनुभव और अभ्यास से अनुमान सहज-स्वाभाविक होते हैं। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सामरिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वयन के लिए दृष्टि विकसित होती है। यही दिशा देती है। आत्मकथा में उन्होंने लिखा है-'मुझे राष्ट्रवाद बहुत ही संकीर्ण और अपर्याप्त सिध्दांत लगता था। राजनीतिक आजादी, स्वाधीनता निस्संदेह आवश्यक है परंतु वे सिर्फ सही दिशा में उठाए गए कदम हैं।

सामाजिक आजादी और समाज तथा राज्य की समाजवादी संरचना के बिना देश और व्यक्ति पर्याप्त प्रगति नहीं कर सकता है।' विश्व मंचों पर भारत के अपेक्षित मान की आधारशिला रखने वाले नेहरू पर 135 वर्ष में बहुत लिखा गया है। नेहरू के निधन के 60 साल बाद वर्तमान पीढ़ी के लिए इन्हें एक बार पढ़ने और संदेश समझने की जरूरत है। इसलिए भी, क्योंकि अध्ययन और अनुभव से ऊर्जान्वित अधिकार आधुनिकता के लिए अत्यावश्यक तत्व हैं। आधारभूत परिवर्तन के लिए प्राचीन मूल्यों और आधारों को आत्मसात करना होता है। इस क्रम में अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का विचार उल्लेखनीय है। वह कहते थे-'एक राष्ट्र जो अपने नायकों का सम्मान नहीं करता है, वह लंबे समय तक नहीं टिकेगा।'

नया बस स्टैंड का मामला ठंडे बस्ते में, पुराने में पर्याप्त जगह नहीं

अस्त-व्यस्त खड़ी रहती हैं बसें, लगता है जाम

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर की आबादी, यात्री बसों और वाहनों की संख्या के अनुपात में कोठीबाजार बस स्टैंड में पर्याप्त जगह नहीं है, ऊपर से चालक बसों को अव्यवस्थित खड़ा कर देते है। इससे अन्य बसों को खड़ा करने जगह नहीं मिलती। मजबूरी में चालकों को बस स्टैंड के इन-आऊट सडक पर बसे खड़ी करनी पड़ती है। जिससे यहां अव्यवस्था और जाम की स्थिति बनती है। चालक सडक़ पर ही बसे खड़ी करके सवारियां भी भरते हैं। शाम और दोहपर के समय हालात ऐसे हो जाते हैं कि लोगों का बस स्टैंड के पास से वाहन निकालना भी मुश्किल हो जाता है। इससे बस स्टैंड का सौदर्यीकरण तो बिगड़ ही रहा है, साथ ही ट्रैफिक व्यवस्था पर भी असर पड़ रहा है। बस चालकों का कहना है कि बस स्टैंड वैसे ही छोटा है, ऊपर से लोग बस स्टैंड के अंदर कारे, जीप सहित अन्य लोडेड वाहन सहित अन्य वाहन खड़ा करते है। इसी कारण बस स्टैंड पर बार-बार जाम लगता है। कई बार वाहनों के बेतरतीब खड़े किये जाने से बस और अन्य वाहन चालको के बीच विवाद भी हो जाता है। बस ऑपरेटरों का कहना है कि नगरपालिका को बस स्टैंड पर बसों को खड़ा कराने व्यवस्था बनानी चाहिए।

रोजाना दो सैकड़ा से अधिक चलती है बसें- शहर के बस स्टैंड से मुलताई, आठनेर, परतवाड़ा, भोपाल, इंदौर, नागपुर सहित अन्य स्थानों के लिए बसें संचालित होती है। इन यात्री बसों में प्रतिदिन हजारों लोग अपने गंतव्य की ओर यात्रा करते हैं। लेकिन इन यात्रियों के लिए भी बस स्टैंड पर खास सुविधाएं नहीं है। पीने का शुद्ध पानी, साफ शौचालय सहित अन्य सुविधाएं यात्रियों को बस स्टैंड पर नहीं मिलती है। भीषण गर्मी में तपती धूप के समय यात्रियों को ठंडे पानी के लिए यहां-वहां भटकना पड़ता है। गौरतलब रहे कि बस स्टैंड पर व्यवस्थाएं बनाने की जिम्मेदारी नगरपालिका प्रशासन की है, लेकिन नगरपालिका प्रशासन भी बस स्टैंड पर व्यवस्था बनाने की दिशा में खास प्रयास नहीं कर रही है। जिसका खामियाजा आमजनता को परेशान होना चुकाना पड़ता है।

सवारी भरने रूकती हैं बसें, बिगड़ रही व्यवस्था ...

शहर में बस चालकों ने एक दर्जन से अधिक अघोषित बस स्टॉप बना लिये है। जहां प्रतिदिन बसे रूकती है और इसी वजह से सडक पर जाम लगने और दुर्घटनाओं की संभावनाएं बढ़ गई है। बस स्टैंड से बस निकलने के बाद मेन सडक़ पर चालक बसे खड़ी करते है, यहां सवारी भरने के बाद मुल्ला पेट्रोल पंप, अस्पताल के सामने, कारगिल चौक, चौपाटी सहित जगह सवारी मिल जाये, वहां बसे रूकती है। यहीं से यात्री सफर शुरू करते है। जबकि नियमानुसार बस स्टैंड से बस छूटने के बाद रास्ते में नहीं रोका जाना चाहिए, किन्तु बस चालक सवारी बैठाने के लिए जगह-जगह बस रोककर सवारी लेते है। सबसे ज्यादा परेशानी बस स्टैंड के सामने और मुल्ला पेट्रोल पंप पर होती है, जहां बसों के रूकने से ट्रॉफिक जाम हो जाता है।

ठंडे बस्ते में नया बस स्टैंड बनाने की योजना .....

शहर के बाहर नए बस स्टैंड का निर्माण किए जाने के साथ ही स्टैंड से यात्रियों को शहर तक पहुंचाने के लिए सिटी बस चलाने का भी प्लान दो साल पहले तत्कालीन कलेक्टर अमनबीर सिंह बैस ने तैयार किया था। तत्कालीन कलेक्टर ने बस स्टैंड निर्माण के लिए जमीन चिह्नित करने एक कमेटी बनाई थी। शहर के बाहर बस स्टैंड निर्माण के लिए तीन-चार लोकेशन देखकर अपनी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करना था। टीम द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करने के बाद भी आज तक बस स्टैंड की शिटिंग का काम नहीं हो सका। तत्कालीन कलेक्टर अमनबीर सिंह बैस के जिले से ट्रांसफर के बाद शहरी सीमा से बाहर नए बस स्टैंड के निर्माण का मामला भी ठंडे बस्ते में चला गया है।

ऐजेविएस के जिला अध्यक्ष बने विवेक अखंडे

बैतूल। अंबेडकरी जनसेवा विद्यार्थी संगठन बैतूल जिला अध्यक्ष के पद पर विवेक अखंडे को नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति प्रदेश अध्यक्ष आशीष खातरकर की सहमति से विद्यार्थी विंग के प्रदेश अध्यक्ष शिव भोरसे ने की है। उल्लेखनीय है कि यह ऐजेएस बैतूल का विद्यार्थी विंग है, जो विद्यार्थियों की आवाज को मजबूती से उठाता है, ताकि विद्यार्थियों को कॉलेज में आने वाली समस्याओं से जूझना न पड़े और उनकी पढ़ाई -लिखाई निरंतर सुचारू रूप से चलती रहे। ऐजेविएस के जिला अध्यक्ष बनने पर विवेक अखंडे को संगठन के पदाधिकारियों, इष्ट मित्रों, सहपाठियों, परिवारजनों ने बधाई दी है।

बुलेट चोरी करने वाले आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बैतूल। गंज पुलिस ने बुलेट मोटरसाइकिल चोरी के एक मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकरी के

अनुसार रिजवान पिता राहुब खान निवासी आजाद वार्ड बैतूल ने 16 सितंबर 24 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उनकी बुलेट मोटरसाइकिल जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर एमपी 48 एमआर 7904 है, उमरी जागीर दरगाह रोड से चोरी हो गई थी। पुलि सने धारा 303(2) बीएनएस 2024 के तहत प्रकरण दर्ज कर विवेचना प्रारंभ की। विवेचना के दौरान अज्ञात आरोपियों की तलाश के बाद गंज पुलिस ने आरोपी आशुतोष पिता रामा टिकमे (उम्र 21 वर्ष, निवासी ग्राम केलापुर गंज) और दीपक पिता राजू सोनी (उम्र 21 वर्ष, निवासी खेडली थाना गंज) को हिरासत में लेकर उनके पास से चोरी की गई बुलेट मोटरसाइकिल जिसकी अनुमानित कीमत एक लाख रुपये है, बरामद कर विधिवत जब्त की। दोनों आरोपियों को न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। इस कार्यवाही में निरीक्षक रविकान्त डेहरिया, आरक्षक अनिरूध्द यादव, प्रधान आरक्षक प्रकाश, प्रधान आरक्षक मयुर, आरक्षक नरेन्द्र एवं आरक्षक मंतराम की विशेष भूमिका रही।

एक शाम बाबा श्याम के नाम का आयोजन 18 नवंबर को

बैतूल। विनोबा नगर स्थित श्री कृष्णम सुपरमार्ट के पास दिगम्बर जैन मंदिर के निकट आगामी 18 नवंबर, सोमवार को एक भव्य कीर्तन कार्यक्रम एक शाम बाबा श्याम के नाम का आयोजन होने जा रहा है। यह भक्तिमय संध्या शाम 7 बजे से प्रारंभ होगी। इस विशेष आयोजन में सुप्रसिद्ध गायक संजू शर्मा (कामठी) और उनके साथी अपनी मधुर आवाज में भजनों की प्रस्तुति देंगे। इस कार्यक्रम का आयोजन संजय चौधरी और श्रीमती रंजू चौधरी द्वारा किया जा रहा है। बाबा श्याम के भक्तों से बड़ी संख्या में उपस्थित होकर प्रभु भक्ति का आनंद लेने का आह्वान किया गया है।

आठनेर के ग्राम बागवानी में बोरी बंधान कर जल संरक्षण का लिया संकल्प

बैतूल। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के निर्देशन में ग्राम बागवानी में जल संरक्षण की एक अनूठी पहल करते हुए ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति और मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम (सीएमसीएलडीपी) के सेक्टर कांवला के छात्र-छात्राओं ने बोरी बंधान कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के आठनेर विकासखंड की समन्वयक मधु चौहान ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए जल संरक्षण के

महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि बारिश का अधिकतर पानी नदी-नालों के माध्यम से समुद्र में चला जाता है, जिससे जलस्तर कम हो रहा है। छोटे-छोटे बोरी बंधानों से धरती में जल पुनर्भरण होता है, जो फसलों और मवेशियों के लिए जल का संरक्षण करने में सहायक है। मधु चौहान ने इसे ईश्वर का अनमोल वरदान बताया और इसके संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। नवांकुर संस्था ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति सावंगी के अध्यक्ष दिनेश माकोड़े ने कहा कि जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए गांव-गांव में ऐसे कार्यक्रम होने चाहिए ताकि सभी जल की महत्ता को समझ सकें। सेक्टर कांवला के मेंटर आशुतोष सिंह चौहान ने भी जल के महत्व पर चर्चा की और बताया कि यह मानव जीवन ही नहीं, बल्कि पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों और समस्त जीव-जंतुओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस कार्यक्रम में राजवंती, सतीश उईके, केशोराव और सुबिता सहित सेक्टर के अन्य सीएमसीएलडीपी छात्र-छात्राएं भी शामिल हुए। कार्यक्रम का समापन जल संरक्षण के संकल्प और भोजन प्रसादी के साथ हुआ।

गुरुनानक देव जी के प्रकाश पर्व पर विशेष दीवान कल 15 नवंबर को

अमृतमयी कीर्तन और संगत के लिए होगा विशेष लंगर

बैतूल। गुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में इस वर्ष गुरु घर में विशेष आयोजन किया जाएगा। दिनांक 15 नवंबर, दिन शुक्रवार को आयोजित इस पावन कार्यक्रम में भाई अरविंदर सिंह जी अपनी रात्रि 9 बजे तक भाई अरविंदर सिंह अपनी बाणी से समस्त संगत को निहाल करेंगे। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद रात्रि में भी गुरु का लंगर आयोजित होगा, जहां सभी श्रद्धालु सेवा और प्रसादी का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

अमृतमयी बाणी से संगत को निहाल करेंगे।

कार्यक्रम की शुरुआत 15 नवंबर को सुबह 11.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक होगी, जिसमें भाई अरविंदर सिंह जी की मधुर वाणी संगत को गुरु के विचारों से जोड़ने का कार्य करेगी। इसके उपरांत दोपहर 1.30 बजे से गुरु का लंगर आरंभ होगा। संध्या समय में भी इस विशेष अवसर पर कीर्तन दीवान का आयोजन किया गया है। संध्या 7.30 बजे से

गुरु घर प्रबंधन ने समस्त संगत से निवेदन किया है कि इस पावन पर्व पर समय से पहुंचकर गुरुनानक देव जी के प्रकाश पर्व की खुशियां प्राप्त करें और गुरु के चरणों में नतमस्तक होकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। इस आयोजन के माध्यम से गुरु के उपदेशों का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया है, ताकि सभी में मानवीय मूल्यों और शांति का प्रसार हो।

बारिश में भी किसानों के लिए खेतों तक होगा सुगम आवागमन: खण्डेलवाल

ग्रेवल सड़कों के निर्माण से आधा दर्जन ग्रामों के किसान – ग्रामीण होगें लाभान्वित

बैतूल। विधानसभा क्षेत्र बैतूल में जनपद पंचायत आठनेर के आधा दर्जन ग्रामों के सैकडों किसानों के लिए अब बारिश के मौसम में भी खेतों तक आवागमन सुगम हो जाएगा । मांडवी , मूसाखेडी, बिजासनी, पाढूर्णा, हिवरा, ढोढवाडा, के लगभग एक हजार किसानों एवं ग्रामीण की मॉग पर बैतूल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल के विशेष प्रयासों से मुख्यमंत्री विशेष निधि से एक करोड इकहत्तर लाख इक्यासी हजार रूपये की लागत से साढे चार किमी. ग्रेवल सडक एवं पुलिया निर्माण की स्वीकृति मिली है। 13 नवम्बर को बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल ने स्थानीय पंचायत प्रतिनिधी, ग्रामीण एवं भाजपा नेताओं की मौजूदगी में ग्रेवल सडकों का भूमिपूजन किया। खेतों तक जाने के लिए ग्रेवल सडके एवं पुलियाओं की स्वीकृति के लिए ग्रामीण एवं किसानों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव तथा क्षेत्रीय विधायक हेमन्त खण्डेलवाल के प्रति आभार व्यक्त किया है ।

बैतूल विधायक ने एनखेडा एवं गुनखेड में 12-12 लाख रूपये के सामुदायिक भवनों तथा बोरपानी व टेमुरनी ग्रामों में 9-9 लाख रूपये की सी.सी.सडकों के निर्माण का भी भूमिपूजन किया। किसानों एवं पंचायत प्रतिनिधियों की मांग पर उन्होनें मुख्यमंत्री विशेष निधी

से मांडवी से पाढूर्णा तक 77.96 लाख रुपये की लागत से 2 किमी,ग्राम पंचायत मूसाखेड़ी में बिजासनी से ग्राम वन नर्सरी तक 55.09 लाख रुपये की लागत से देड़ किमी और ग्राम पचायत पाढूर्णा में प्राथमिक शाला ढोढखेड़ा से गौलाखेडा तक 38.76 लाख रुपये की लागत से एक किमी ग्रेवल सडक एवं पुलियाओं का निर्माण स्वीकृत करवाया है। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें मौके पर मौजूद इंजीरियरों और अधिकारियों से साफ तौर से कहा कि निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। उच्च गुणवत्ता की निर्माण सामग्री इस्तेमाल की जाए एवं निर्माण कायों की सतत मानीटरिंग करे। उन्होनें ग्रामीणों एवं पंचायत प्रतिनिधियों से कहा कि अच्छा कार्य हो यह सबही जिम्मेदारी है। इसलिए सभी निर्माण कायों की गुणवत्ता की चिंता करें। भूमिपूजन कार्यक्रम में भाजपा जिला कार्यालय मंत्री कृष्णा गायकी, मंडल अध्यक्ष गोवर्धन राने, शिवदयाल आजाद, संतोष धाकड़, प्रयागराज सराटकर सहित ग्रामीण, किसान, पंचायत प्रतिनिधी, इंजीनियर अधिकारी मौजूद रहे।

गंभीर हालत में मिले युवक की इलाज के दौरान मौत

बैतूल। मंगलवार रात गंभीर हालत में मिले युवक की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। युवक को परिजन ही अस्पताल लेकर आये थे, जहां परिजनों के अलग-अलग बयान होने से पुलिस ने मामले को संदिग्ध मानकर जांच कर रही है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार रात करीब 2 बजे परिजन गंभीर हालत में खंडवा जिले के थाना खालवा गांव चाखरा निवासी सुखराम पिता सुखलू पाटिल (40) को जिला अस्पताल लेकर पहुंचे थे। वह उसके मुंह बोले भाई के घर ग्राम बिच्छू टेकड़ी मोहदा आया हुआ था। साथ आए परिजनों ने बताया कि वह छत से नीचे गिर गया है। मामला संदिग्ध लगने पर पुलिस ने कड़ाई से पूछताछ की तो बोले, सडक़ पर घायल हालत में पड़ा मिला था। शायद किसी अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी होगी।

सांसद स्व.विजय कुमार खंडेलवाल को अर्पित किए श्रृद्धा सुमन

17वीं पुण्यतिथी पर आयोजित की गई श्रृद्धांजली सभा

बैतूल। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं अजेय सांसद स्व. विजय कुमार खंडेलवाल की 17वीं पुण्यतिथी पर जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित श्रृद्जली सभा में वरिष्ठ गणमान्य नागरिको, पत्रकारो, भाजपा नेताओ एवं सामाजिक कार्यकर्ताओ के साथ परिजनो ने श्रृद्वेय बाबूजी के छायाचित्र सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर श्रृद्वासुमन अर्पित किए। इस दौरान पूर्व सांसद सुभाष आहूजा, ज्योति धुर्वे, डॉ. सतीष खंडेलवाल, पं. कांतू दीक्षित, विधायक हेमंत खंडेलवाल, नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर, उपाध्यक्ष महेश राठौर, जिला उपाध्यक्ष आनंद प्रजापित, पूर्व जिलाध्यक्ष वसंत बाबा माकोडे, सहित बडी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता, वरिष्ठ नागरिकगण उपस्थित रहे।

जिला चिकित्सालय का निजीकरण गरीब और मध्यम वर्ग के लिए अत्यंत हानिकारक: वाईकर

गरीबों के हित में सरकार से पुनर्विचार की मांग, मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

बैतूल। आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष शैलेष कुमार वाईकर ने मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपते हुए बैतूल जिला चिकित्सालय को निजी हाथों में देने के निर्णय का विरोध किया है। उन्होंने यह ज्ञापन डिप्टी कलेक्टर को सौंपा और कहा कि यह फैसला जिले के गरीब और मध्यम वर्ग के लिए अत्यंत हानिकारक होगा। ज्ञापन में वाईकर ने बताया कि बैतूल जिला चिकित्सालय वर्तमान में शासन द्वारा संचालित है और यहां गरीब, पिछड़े और मध्यम वर्ग के लोगों को मुफ्त में इलाज की सुविधा मिलती है। लेकिन हाल ही में सामने आए निर्णय के अनुसार, सरकार अस्पताल को (पीपीपी) मोड में निजी मेडिकल कॉलेज संचालकों के हाथों में सौंपने की योजना बना रही है। वाईकर ने इस फैसले को बैतूल की जनता के हितों के खिलाफ बताते हुए कहा कि जिला अस्पताल में पहले से ही वार्ड और बेड की संख्या बेहद कम है जबकि यहां मरीजों की संख्या अधिक होती है। उन्होंने बताया कि इस नई नीति के अनुसार, जिला अस्पताल के 25 प्रतिशत बेड निजी अस्पताल की तर्ज पर संचालित होंगे, जहां इलाज के लिए मरीजों से शुल्क लिया जाएगा। वर्तमान में अस्पताल में करीब 300 बेड हैं, जिसमें से यदि 25 प्रतिशत बेड निजी तौर पर संचालित किए जाते हैं, तो केवल 225 बेड ही शासकीय रूप से संचालित रहेंगे, जहां गरीब और जरूरतमंद मरीजों का मुफ्त इलाज हो सकेगा। 225 बेड के बाद आने वाले मरीजों को या तो निजी वार्ड का शुल्क देना पड़ेगा या फिर निजी अस्पताल में इलाज करवाना पड़ेगा, जिससे गरीबों पर आर्थिक बोझ बढ़ेगा। ज्ञापन देने वालों में प्रदेश सह सचिव अजय सोनी, जिला उपाध्यक्ष संतोष देशमुख, शंकर पेंद्राम, जिला मीडिया प्रभारी मुकेश गायकवाड, पवन गावंडे, अनिल पवार, संदीप वाईकर, अरविंद गीद आदि शामिल थे।

पूर्व विधायक निलय डागा कल 15 नवंबर को निकालेंगे मां ताप्ती चुनरी पद यात्रा

बैतूल। किसानों और सर्वहारा वर्ग की खुशहाली एवं समृद्धि के लिए मां ताप्ती चुनरी पद यात्रा इस वर्ष 15 नवंबर को भव्य स्वरूप में निकाली जाएगी। इस पावन यात्रा का आयोजन पूर्व विधायक निलय विनोद डागा द्वारा किया जा रहा है, जिन्होंने 11 वर्षों तक लगातार यह यात्रा निकालने का संकल्प लिया है। इस वर्ष यह यात्रा आठवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। विगत 7 वर्षों से श्री डागा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दीपाली डागा के साथ यह पद यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न कर चुके हैं। अब यह यात्रा बैतूल जिले का प्रमुख धार्मिक आयोजन बन चुकी है। पूर्व विधायक निलय विनोद डागा की इस यात्रा का उद्देश्य सूर्यपुत्री और जीवनदायिनी मां ताप्ती की महिमा का गुणगान करते हुए क्षेत्र के किसानों एवं गरीब वर्ग की समृद्धि के लिए प्रार्थना करना है। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित इस धार्मिक यात्रा में युवाओं, किसानों और महिलाओं का जनसमूह सम्मिलित होता है, जो श्रद्धा और आस्था के साथ मां ताप्ती की चुनरी अर्पण करने के लिए बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इस वर्ष मां ताप्ती चुनरी पद यात्रा का शुभारंभ 15 नवंबर, 2024 को प्रातः 7 बजे लल्ली चौक स्थित प्राचीन शिव मंदिर में पूजन-अर्चन से होगा। यात्रा की शुरुआत पूजा के बाद लल्ली चौक से होगी, जो थाना चौक, टिकारी अखाड़ा चौक, कारगिल चौक, सदर, ग्राम धनोरा, भड़ूस, महदगांव, डहरगांव और खेडी से होते हुए दोपहर 2 बजे ताप्ती घाट पहुंचेगी। यहां मां ताप्ती को चुनरी अर्पण करने के साथ पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाएगा, जिसके बाद सभी यात्रा में मौजूद एवं वहां उपस्थित भक्तों के लिए भोजन प्रसादी का प्रबंध किया गया है। निलय डागा और उनकी पत्नी श्रीमती दीपाली निलय डागा ने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि इस यात्रा में सम्मिलित होकर धर्मलाभ अर्जित करें और मां ताप्ती की कृपा से सभी के कल्याण की प्रार्थना करें।

स्मृति

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

सागर से लौटते हुए चाचा नेहरू और कवि पिता की याद

जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन आ रहा है और मैं अपने शहर सागर से लौट रहा हूँ। वहाँ रज़ा फाउण्डेशन ने देश के शहरों में कविता की तलाश के अपने अभियान के अंतर्गत एक आयोजन किया जिसमें मेरे लोककवि पिता माधव शुक्ल मनोज की कविता में बसे गाँवों के जीवन पर कुछ विमर्श हुआ। पिता के समकालीन कवि शिवकुमार श्रीवास्तव और राजा दुबे की कविताएं भी इस विमर्श में शामिल हुईं। स्थानीयता में कविता का पल्लवन कैसे होता है और वह फिर सार्वजनीन होती जाती है इसकी एक झलक इस साहित्य सागर परिसंवाद में मिली।

चाचा नेहरू आज़ाद भारत के लोगों की मेहनत के छलकते पसीने से श्रम की गीता लिखना चाहते थे। उनके व्यक्तित्व से हिंदुस्तान की बहुरंगी झांकी दीखती है। वे देश के अपनेपन के नायक लगते थे, किसी परायेपन के नहीं। वे सब हिंदियों के हमवतन थे, उन्हें पूरे हिंद पर नाज़ था। उन्होंने भारत के जीवन दर्शन में घुली उस लम्बी कविता को पढ़ा था जो ऋग्वेद के नासदीय सूक्त के इस प्रश्न से शुरू होती है... 'सृष्टि का कौन है कर्त्ता? कर्त्ता है या अकर्त्ता'। जीवन के बारे में घनीभूत जिज्ञासा से भरी यह कविता उपनिषदों की संवादपूर्ण गहरी अंतर्दृष्टि, भगवद्गीता के सार और रामायण के छंदों में बसी है। तभी तो पण्डित नेहरू अपने देश के लोगों से यह कह सके कि ...'अपने जीवन को कविता बनाना चाहिए'।

देश में दोनों देश साथ चल रहे थे... गांधी का देश और नेहरू का देश। मेरा जन्म इन दो देशों के बीच की देहरी पर हुआ। मुझे अपनी स्कूल की बालभारती में गांधी बन जाने का गीत भी सुनाया जाता और जब स्कूल में विविध भेषभूषा प्रतियोगिता होती तो मास्साब मुझे नेहरू भी बनाया करते। मेरा बचपन गांधी जी और नेहरू जी की यादों से जुड़ गया। मैं दोनों देशों की आब-ओ-हवा में पला-बढ़ा। उन दिनों नेताओं के व्यक्तित्व में गांधी जी की सद्भावपूर्ण सहजता और नेहरू के आधुनिक बोध का तेज झलकता था।

अपनी किशोर वय में चाचा नेहरू की जीवनी पढ़कर अनुभव हुआ कि उनका नज़रिया पूरब और पश्चिम के वैचारिक तानों-बानों से मिलकर बना है। वे पश्चिम में अपने आपको एक अजनबी की तरह महसूस करते थे और उन्हें कुछ ऐसा भी लगता था कि वे अपने ही देश में निर्वासित हैं। जो उनके देहावसान के बाद अब सच साबित हो रहा है। नेहरू ने अपने आज़ाद मुल्क में किसी प्राचीन राजदण्ड को नहीं, स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुता के मूल्य पर आधारित आधुनिक संविधान को लोकतंत्र के घर में स्थापित किया था।

मेरे लोककवि पिता माधव शुक्ल मनोज अपनी कविताएं रचकर कभी गांधी के देश के और कभी नेहरू के देश के मधुर गीत गा लेते। वे दोनों देशों को अपने दिल में संजोये हुए थे। इन दोनों देशों के बीच एक सेतु था जो अब तोड़ा जा रहा है। आज अपने शहर से लौटते हुए सोच रहा हूं कि मैं किस देश में रहता हूं, मेरा घर अब किस देश में है जहां मैं अपने को अपने घर में होने जैसा अनुभव कर पाऊं। मेरे अपने दोनों देश तो पीछ छूट रहे हैं। मैं अब किसी तीसरे देश में अपने आपको ही अजनबी लग रहा हूं।

अपने अवसान से पहले चाचा नेहरू ने देश के नाम

वसीयत लिखते हुए यह कामना की थी कि मेरे तन की माटी गंगा के जल और किसानों के पसीनों से भीगी धरती के कण-कण में मिल जाये और मैं खेतों में अंकुराऊं, फ़सलों में मुस्कुराऊं... यह भाव मेरे कवि-पिता की उस कविता का है जिसके छंद में वे नेहरू जी की वसीयत रच रहे थे। कविता अभी पूरी नहीं हुई थी और चाचा नेहरू चल बसे।

नेहरू जी की मृत्यु की ख़बर सुनकर पूरा सागर शहर और कवि पिता फफक-फफककर रोने लगे। वे गर्मियों के दिन थे। जेठ मास की तपती दुपहरी में हर किसी की डबडबाई आंखों में आंसू थमते ही नहीं थे... लीडर जवाहरलाल से बिछुड़ने की पीड़ा से भरा उदास जल पूरे शहर की आंखों से चुपचाप बह रहा था। उस दिन घर में शाम का खाना नहीं बना। सब चुप थे। तुलसी बिरवे पर रखे अकेले दीपक की लौ सबकी सजल आंखों में झिलमिला रही थी।

जवाहरलाल नेहरू ऐसे खोजी की तरह लगते हैं जो अपने आपको और अपने देश को सनातन परंपरा और विश्व इतिहास में खोजते रहे। उनकी भारत की खोज में यही पद्धति अपनायी गयी है। वे कहते थे कि... हम तस्वीर के वास्तविक चेहरे को दीवार की तरफ़ मोड़कर इतिहास का रुख़ नहीं बदल सकते, हमें तो उसका सामना करना ही होगा। क्या आज हमारे नेता इतिहास का सामना कर पा रहे हैं? लीडर जवाहरलाल ने आज़ाद भारत में जिन आधुनिक कारखानों, नदियों पर बांध और नये ज्ञान-विज्ञान केन्द्रों को रचा, उन्हें ही देश के नये तीर्थ कहा। इन तीर्थों की अनुकम्पा से ही देश में समृद्धि रचने.. की नयी रामधुन...'आराम है हराम'...गूंजने लगी।

चाचा नेहरू इसी तरह अपने आपको खोजने में उत्सुक थे तभी तो वे निर्भय होकर गुटनिरपेक्ष हो सके। संसार के शक्ति केन्द्रों के आगे समर्पण से इंकार करने का यह मार्ग तो पण्डित नेहरू ने ही पूरे विश्व को दिखाया। जो नेता दुनिया के इतिहास से मुंह मोड़कर देश चलाने का दावा करते हैं वे हमेशा अविश्वसनीय बने रहते हैं और जनता का विश्वास भी खो देते हैं।

जवाहरलाल नेहरू की आवाज़ सुन रहा हूँ। वे यहूदियों और फिलस्तीनियों से कह रहे हैं कि तुम दोनों ही ब्रिटिश और फ्रांसीसी उपनिवेशों के जमाने से सताये गये हो। इतिहास गवाह है कि यहूदियों को खदेड़ा जाता रहा है। फिलस्तीन में अरबों की आज़ादी का सपना टूटता रहा है। कितना अच्छा हो कि इतिहास से सीखकर दोनों कौमों में एक-दूसरे की समृद्धि और सुरक्षा की भावना जागे और वे उन शक्तियों से सतर्क रहें जो अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए दोनों का बेजा इस्तेमाल करती आ रही हैं।

पण्डित नेहरू एक विश्वयार की तरह याद आते हैं। मेरे पिता अक्सर कहा करते कि नेहरू का दिल बहुत बड़ा है। जब 1962 में चीन ने भारत की सीमाओं पर हमला किया और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को ठेस पहुंचायी तो नेहरू के दिल को भारी आघात लगा। मैं सोचा करता कि जिसका दिल बड़ा होता होगा, उसके साथ चलने वाला उसका देश भी उदार होता होगा। छोटे दिल में इतना बड़ा देश कैसे समा सकता है? चाचा नेहरू को भूलना मुश्किल है। पिता को भूलना कठिन है। दोनों के कदमों की आहट आज भी सुनायी दे रही है।

सीएम राइज स्कूल के शिक्षक ने छात्र को डस्टर फेंक कर मारा, ज्ञापन सौंपा

सुबह सवेरे सोहागपुर। सीएम राइज स्कूल सोहागपुर में पदस्थ शिक्षक श्रवण कुमार शर्मा के विरुद्ध एक शिकायती आवेदन पत्र विद्यार्थी के अभिभावक ने अनुविभागीय अधिकारी असवनराम चिरामन को सौंपा है। इस शिकायत में अभिभावक शरद चौरसिया लिखा गया कि मेरा भतीजा मोहित चौरसिया कक्षा सातवीं में अध्ययनरत है । कल दिनांक को 12 नवंबर को कक्षा में पढ़ाई के दौरान मेरे भतीजे मोहित चौरसिया को उसके शिक्षक श्रवण कुमार शर्मा ने डस्टर फेक कर मार दिया था इस कारण उसकी नाक में चोट लग गई थी।इस ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि शिक्षक शर्मा पढ़ाई के समय में बैठकर मोबाइल चलाते हैं। इसके साथ उक्त शिक्षक कुर्सी पर बैठकर सो जाते हैं । उक्त शिक्षक की पूर्व में भी बहुत से विद्यार्थियों के साथ मारपीट करने की शिकायते की आई हैं। वरिष्ठ अधिकारियों को भी अवगत कराया है परन्तु कोई कार्यवाही नहीं हो पाई है। इस अवसर पर नागरिक संघर्ष समिति संयोजक अधिवक्ता शिवकुमार पटेल , अभिभावक शरद चौरसिया,एवं पीड़ित छात्र मोहित चौरसिया आदि उपस्थित थे। इस संबंध में प्राचार्य सीएम राइस एवं ब्लाक शिक्षा अधिकारी को भी ज्ञापन सौंपा गया है।

बाल विवाह रोकने के लिए हुआ एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

नरसिंहपुर। देवउठनी ग्यारस के अवसर पर बाल विवाह रोकने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले की अध्यक्षता में मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में किया गया। इस कार्यशाला में डिप्टी कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट, जिले के विभिन्न धर्मों के धर्म गुरू, शादियों में सेवा प्रदान करने वाले टेन्ट, बैंड, प्रिंटिंग प्रेस, शिक्षा, चिकित्सा, महिला एवं बाल विकास एवं पुलिस विभागों से प्रतिभागी, अधिकारी-कर्मचारी और बच्चे मौजूद थे। कार्यशाला में कलेक्टर श्रीमती पटले ने कम उम्र में बच्चों की शादी के दुष्प्रभाव के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि बाल विवाह से पीड़ित की शारीरिक-मानसिक, आर्थिक, मनोसामाजिक एवं सामाजिक उन्नति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। बच्चों के अपने सपने होते हैं, यदि बाल विवाह हो जाता है, तो बच्चों के सपने अधूरे रह जाते हैं और इनका जीवन कष्टमय हो जाता है। कार्यशाला में डिप्टी कलेक्टर श्रीमती जाट ने सभी को बाल विवाह एवं दहेज प्रथा को रोकने के लिए शपथ दिलाई। उन्होंने बाल विवाह की शिकायत प्राप्त होती है, तो जिले में स्थापित कंट्रोल रूम, एसडीएम ऑफिस, पुलिस थाने, चाईल्ड हेल्प लाईन 1098 महिला एवं बाल विकास विभाग को सूचित करें। सहायक संचालक महिला एवं बाल विकास विभाग श्री राधेश्याम वर्मा ने बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के प्रावधानों के बारे में जानकारी दी। यदि कोई भी व्यक्ति किसी बाल विवाह में शामिल होता है या अपनी सेवाएं या सहयोग प्रदान करता है, तो उसे एक लाख रूपये का जुर्माना और 2 वर्ष का कारावास का दंड दिया जा सकता है। कार्यक्रम में मौजूद बच्चों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

चाकू से मारने वाले आरोपी को 6 माह का सश्रम कारावास

नरसिंहपुर। न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी की न्यायालय द्वारा मारपीट करने के प्रकरण में आरोपी सौरभ विश्वकर्मा पिता श्री परषोत्तम विश्वकर्मा उम्र 24 वर्ष निवासी हनुमान वार्ड गाडरवाराए थाना गाडरवारा जिला नरसिंहपुर मप्र को दोषसिद्ध पाते हुए आरोपी को भादवि की धारा. 324/34 में 06 माह का सश्रम कारावास तथा 1000/एक हजार रूपयेद्ध के अर्थदण्ड सें दंडित किया गया। जिला अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी द्वारा बताया गया कि दिनांक 17/05/2018 को अभियोगी चंद्रशेखर गुर्जर अपना ट्रेक्टर सुधरवाने महिंद्रा शो.रूम गाडरवारा गया था। अभियोगी गुटखा लेने नगरिया पान दुकान पानी टंकी के पास मोटरसायकल से गया था। रात्रि करीब 9:30 बजे दुकान के सामने मोटरसायकल से उतरते समय अभियोगी का पैर स्कूटी सवार तीनों लडको को धोखे से लग गया था। इसी बात को लेकर तीनों लडके अभियोगी को मां.बहन की गंदी.गंदी गालियां देने लगे। अभियोगी के द्वारा गाली देने से मना करने पर तीनों लडके अभियोगी के साथ झूमाझटकी करने लगे। तीनों लडकों में से एक लडके ने चाकू से अभियोगी के बांये पैर की जांघ में दो जगह एवं दाहिनें पैर की जांघ में एक जगह वार किया। चाकू लगने से अभियोगी को घाव हो गया तथा खून निकलने लगा। घटना स्थल पर खडे लोगो ने घटना में बीच.बचाव किया था। घटना के पश्चात् उसे इलाज हेतु शासकीय अस्पताल गाडरवारा ले जाया गया। अस्पताल से तहरीर प्राप्त होने पर तहरीर जांच के आधार पर साक्षीगण के कथन लेखबद्ध किये गये। साक्षीगण के कथन तथा अस्पताल तहरीर के आधार पर तीन अज्ञात अभियुक्तगण के विरूद्ध थाना गाडरवारा के अपराध क्रमांक 416/2018 अंतर्गत धारा 294/ 324/34 भारतीय दण्ड संहिता 1860 के अधीन दंडनीय अपराध की प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखबद्ध की गई।

धार में राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम की तैयारियां अंतिम चरण में

संभागायुक्त, आईजी ने किया हेलीपैड और सभास्थल का निरीक्षण

धार। जिले में 15 नवम्बर से 26 नवम्बर तक जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। इस दौरान 15 नम्बर को पीजी कॉलेज के मैदान में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में राज्यपाल मंगूभाई पटेल और प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का शामिल होना प्रस्तावित है। आयोजित होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा के संबंध में संभागायुक्त दीपक सिंह और आईजी अनुराग ने पुलिस लाइन में बने हेलीपेड और पीजी कॉलेज के मैदान में बने सभास्थल का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने व्यवस्थाएं देखी और संबंधित अधिकारियों को शेष कार्य को शीघ्र पूर्ण करने के हेतु आवश्यक निर्देश दिए।

इस दौरान कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, डीआईजी निमिष अग्रवाल, जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी, अपर कलेक्टर अश्विनी कुमार रावत सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। व्यवस्थाओं के अवलोकन करने पर उन्होंने बताया कि 15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाले

जनजातीय गौरव दिवस के कार्यक्रम के संबंध में यहां व्यवस्थाएं अंतिम चरण में है। यहां आम लोगों के बैठने की व्यवस्था सेक्टर वाइस की जा रही है। साथ ही पर्याप्त पुलिस फोर्स की तैनाती की जा रही है। इसके अलावा सुरक्षा की दृष्टि से यहां आवश्यक बैरिकेटिंग की व्यवस्था अपने अंतिम चरण में है। कार्यक्रम के सफल आयोजन के संबंध में जिला प्रशासन द्वारा अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है।

झाबुआ को हराकर धार जिले की अंडर-18 टीम सेमीफायनल में पहुंची

धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन के पास खिलाड़ियों की प्रैक्टिस के लिए खेल मैदान भी उपलब्ध नहीं है

धार। खंडवा में चल रहे अंतर जिला क्रिकेट स्पर्धा में धार जिले की अंडर -18 टीम ने दर्शन गाँधी,रेहान कुरेशी,रोहित काजले कि शानदार बल्लेबाजी की बदौलत 50 ओवर मैं 201 रन बनाये जवाब मैं झाबुआ की टीम को 91 रन पर आल आउट हो गई । धार की ओर से आदर्श जाट ने घातक गेंदबाजी करते हुए चार विकेट लिए जबकि युवराजसिंह ने 2 विकेट लिए। आश्चर्यजनक बात यह है कि आज धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन के पास बच्चों की प्रैक्टिस के लिए खेल मैदान भी उपलब्ध नहीं है और अभी हाल ही में अंडर-15 का टूर्नामेंट भी धार जिले की टीम ने जीता है कोच आलोक दुबे के मार्गदर्शन और रणनीतियों के कारण खिलाडी लगातार उम्दा प्रदर्शन करते आ रहे हे टीम की इस उपलब्धि एवं खिलाड़ीयो के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर एसोसिएशन के चेयरमैन करन सिंह पवार, अध्यक्ष प्रदीप जोशी ,उपाध्यक्ष धीरेंद्र दीघे , विनोद मित्तल, डॉ अजेश माइकल ,निखिल ग्वाल ,अमित जैन,सचिव राजेन्द्र सिंह चौहान , कोच प्रमोद पाठक, प्रमोद शर्मा , आलोक दुबे मेनेजर ,स्वराज तढवाल , चेतन सिंह .विशेष मस्कुले आदि ने बधाई प्रेषित की। जानकारी एसोसिएशन के प्रवक्ता कुशल शर्मा ने दी।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में 356 विद्यार्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई

सुबह सवेरे सोहागपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान मे सम्पूर्ण भारत मे आयोजित होने वाली भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2024 का आयोजन

सीएम राइस स्कूल,ज्ञान सागर इंटरनेशनल इंग्लिश मीडियम स्कूल, कन्या शाला सोहागपुर, कन्या शाला शोभापुर, जेनिथ स्कूल शोभापुर आदि में सोहागपुर ब्लाक के 356 विद्यार्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराने परीक्षा दी। इस परीक्षा में मप्र जन अभियान परिषद् सोहागपुर के ÷मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृव विकास क्षमता पाठ्यक्रम÷ के छात्र एवं छात्राओं ने भी भाग लिया द्य इस ज्ञानवर्धक परीक्षा में जन अभियान परिषद के ब्लाक समन्वयक किशोर कड़ोले, मेंटरो समस्त शालाओं के संचालक, प्राचार्य एवं शिक्षकों ने सहयोग दिया। इस अवसर पर गायत्री परिवार, प्रज्ञा मण्डल के एच पी मान्धाता , रतन सराठे ,हरेराम वर्मा , आशितोष राजपूत ,श्रीमती प्रतिभा साहू सेमरी, एम पी पटेल , महेश साहू ,श्रीमती मीरा साहू , गजेंद्र ठाकुर, श्यामसिंह मीना, मंजू मेम, सचिन, विवेकानंद दुबे,गायत्री प्रज्ञा मण्डल, सयोजक पवन जायसवाल आदि उपस्थित थे।

गायत्री परिवार सोहागपुर ने सभी सहयोग करने वाले बंधुओं का आभार व्यक्त किया है।

राइजिंग टेनिस अकादमी, धार के 11 खिलाड़ियों ने मुंबई में आयोजित विश्व पिकलबॉल चैंपियनशिप में भाग लिया, जीते तीन कांस्य पदक

धार। धार की राइजिंग टेनिस अकादमी के 11 होनहार खिलाड़ियों ने मुंबई के प्रतिष्ठित क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित वर्ल्ड पिकलबॉल चैंपियनशिप में भाग लेकर धार का नाम रोशन किया। यह अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता, ऑल इंडिया पिकलबॉल एसोसिएशन द्वारा 12 से 17 नवंबर तक आयोजित की जा रही है, जिसमें 50 से अधिक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया है।

राइजिंग टेनिस अकादमी के खिलाड़ी इस टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। अंडर-18 बॉयज़ सिंगल्स श्रेणी में पार्थ विजयवर्गीय ने कांस्य पदक हासिल किया, जबकि अंडर-18 गर्ल्स सिंगल्स श्रेणी में निष्ठा गुप्ता ने कांस्य पदक जीता। इसके साथ ही, अंडर-18 मिक्स्ड डबल्स श्रेणी में जय अग्रवाल और निष्ठा गुप्ता की जोड़ी ने कांस्य पदक जीतकर अकादमी का मान बढ़ाया।

इन खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने में अकादमी के कोच शुभी व्यास और जयंत सोलंकी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी मेहनत और मार्गदर्शन के बिना यह सफलता संभव नहीं होती। जानकारी देते हुए धार पिकलबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष उज्जवल सिंह ने उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए खिलाड़ियों को बधाई दी है।

हेल्थ पर्यावरण सामाजिक संस्था ने सेवासदन के सहयोग से लगाया शिविर

सुबह सवेरे सोहागपुर। हेल्थ पर्यावरण सामाजिक संस्था ने संत हिरदाराम सेवासदन बैरागढ़ के सहयोग से आदर्श पब्लिक स्कूल परिसर में नेत्र शिविर का आयोजन किया।इस शिविर में शाला के समस्त छात्र छात्राओं का नेत्र परीक्षण किया गया। इसके साथ ही छात्र छात्राओं का स्वास्थ्य की भी जांच की गई। इस अवसर पर हेल्थ पर्यावरण सामाजिक संस्था के ज्ञानी सुरजीतसिंह, डाक्टर जोयब अली, बलवीरसिंह पवार, जावेद हुसैन, संत हिरदाराम सेवासदन नेत्र बैरागढ़ के डॉक्टर शिवम सराठे, मैडम सानू मालवीय, आदर्श स्कूल के संदीप यादव, कुसुम भदोरिया, प्रियंका सूर्यवंशी सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।हेल्थ पर्यावरण सामाजिक संस्था के ज्ञानी सुरजीतसिंह ने इस प्रतिनिधि को बताया कि शाला के समस्त छात्र छात्राओं का परीक्षण किया गया। जिसमें कई बच्चों को आंखों में प्रॉब्लम पाई गई हैायह प्रॉब्लम अधिकांश मोबाइल चलाने से हो रही है। बच्चों को मोबाइल से परेहिज करने की सलाह दी गई है। हेल्थ पर्यावरण सामाजिक संस्था ने नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए मुहीम चलाई रही है।

मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अंतर्गत दिव्यांग सहायता अनुदान योजना

नरसिंहपुर। राज्य शासन के श्रम विभाग के मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अंतर्गत दिव्यांग सहायता अनुदान योजना संचालित है। इस योजना में आवेदन को मोटर चलित तिपहिया साईकिल एवं अन्य सभी दिव्यांग उपकरण क्रय करने पर क्रय मूल्य की 100 प्रतिशत राशि जो अधिकतम 35 हजार रुपये मंडल द्वारा अनुदान के रूप में प्रदाय की जायेगी। इस योजना का लाभ लेने के लिए हितग्राही मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अंतर्गत पंजीकृत श्रमिक, वास्तविक में निर्माण श्रमिक होना चाहिये। पंजीकृत श्रमिक अथवा पंजीयन कार्ड में सम्मिलित सदस्य का दिव्यांगता के लिए दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा एक जनवरी 2023 अथवा इसके पश्चात वैध अद्वितीय विकलांगता आईडी- यूडीआईडी कार्ड में दिव्यांगता का 40 प्रतिशत अथवा इससे अधिक होना चाहिये। मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार मंडल के अंतर्गत पंजीयन की दिनांक मोटर चलित तिपहिया साईकिल एवं अन्य सभी दिव्यांग उपकरण क्रय के दिनांक के पूर्व अनिवार्य है। पंजीकृत श्रमिक एवं उसके परिवार के एक सदस्य को प्रति सदस्य के मान से सिर्फ एक बार (प्रति पंजीयन कार्ड अधिकतम दो बार) इस योजना का लाभ मिलेगा। क्रय किये गये मोटर चलित तिपहिया साइकिल पर मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अनुदान के क्रय अनिवार्य रूप से लिखना होगा। योजना के अंतर्गत केवल आर्टिफिशियल लीम्ब्स मेनूफेक्चरिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा निर्मित मोटर चलित तिपहिया साईकिल एवं अन्य दिव्यांग उपकरण के क्रय पर ही हितलाभ देय होगा। क्रय किये गये मोटर चलित तिपहिया साईकिल क्रय दिनांक से तीन वर्ष तक विक्रय से प्रतिबंधित रहेगा। सहायता राशि भुगतान के लिए आवेदन को मप्र भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के पोर्टल पर अनुदान के लिए आवेदन प्रस्तुत करना होगा।

अवैध खनिज परिवहन पर नियंत्रण के लिये 41 ई-चेकगेट की होगी स्थापना : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रदेश की सभी 7 हजार खदानों को किया जियो टैग

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में अवैध परिवहन रोकने के लिये एआई आधारित 41 ई-चेकगेट की स्थापना की जा रही है। इन ई-चेकगेटों पर वेरीफोकल कैमरा, आरएफआईडी लीडर, ऑटोमेटिक नम्बर प्लेट रीडर की सहायता से खनिज परिवहन में संलग्न वाहनों की जाँच की जायेगी।

परियोजना में पॉयलेट प्रोजेक्ट के रूप में खनिज परिवहन के लिये महत्वपूर्ण मार्ग के 4 स्थानों पर ई-चेकगेट स्थापित कर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। अवैध परिवहन की निगरानी के लिये राज्य स्तर पर भोपाल में कमॉण्ड एवं कंट्रोल सेंटर और जिला भोपाल एवं रायसेन में जिला कमॉण्ड सेंटर स्थापित किये गये हैं। माह दिसम्बर 2024 तक सभी 41 ई-चेकगेट की स्थापना किये जाने का लक्ष्य है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में अवैध खनन की रोकथाम के लिये उपग्रह और ड्रोन आधारित परियोजना भी प्रारंभ की गयी है। इसके द्वारा प्रदेश की सभी 7 हजार खदानों की जियो टैग कर खदान क्षेत्र का सीमांकन किया गया है। यह परियोजना पूर्ण रूप से लागू होने पर अवैध खनन को चिन्हित कर प्रभावी रोकथाम की जा सकेगी। परियोजना के लागू होने पर स्वीकृत खदान के अंदर थ्री-डी इमेजिंग एवं वॉल्यूमेट्रिक एनालिसिस कर उत्खनित खनिज की मात्रा का सटीक आकलन किया जा सकेगा।

21 गांवों की जमीनों का होगा अधिग्रहण

दक्षिण-पश्चिम बायपास के लिए 154 करोड़ मिले, नीलबड़-रातीबड़ से इंदौर हाईवे पहुंचेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ट्रैफिक का दबाव कम करने के लिए दक्षिण-पश्चिम ग्रीन फील्ड बायपास का निर्माण जल्द शुरू होने वाला है। रिंग रोड की तर्ज पर बने इस बायपास के लिए 154 करोड़ रुपए जिला प्रशासन को मिल गए हैं। इसी माह से भू-अर्जन की कार्रवाई शुरू की जाएगी। कुल 40.90 किमी लंबा यह बायपास 21 गांवों से गुजरेगा। बायपास का 6 किमी का हिस्सा कोलार के जंगलों से होकर गुजरेगा, जिसके लिए पेड़ों की कटाई होगी।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए 13 करोड़ रुपए इस कार्य में लगाए जाएंगे। बायपास की चौड़ाई 70 मीटर होगी, जिसमें 4-लेन रोड के साथ 6-लेन स्ट्रक्चर और दोनों ओर टू-लेन सर्विस रोड भी बनेगा। इस बायपास से नीलबड़-रातीबड़ के नए भोपाल के निवासी सीधे देवास-इंदौर स्टेट हाइवे से जुड़ जाएंगे।

यहां से होकर गुजरेगा

सराकिया, खामखेड़ा, हमीरी, मुंडला, वामुलिया पवार, धानखेड़ी, नाडोर, पंचामा, शोभापुर जाहेज, कालापानी, महावादिया, बोरदा, भानपुर, केकादिया, समसपुरा, अमरपुरा, आमला, सरवर, झागरिया खुर्द, मुंडला, नरेला, टीलाखेड़ी, खोकारिया, बोरखेड़ी, पिपल्याधाकड़ और फंदाकलां।

साढ़े 3 लाख रिश्वत लेते सहायक आबकारी अधिकारी गिरफ्तार

ठेकेदार से डीईओ ने रकम देने को कहा था; शराब ठेका चलाने 5 लाख महीने बंदी मांगी

सिवनी (नप्र)। जबलपुर की लोकायुक्त पुलिस ने मंगलवार शाम सिवनी जिले के सहायक आबकारी अधिकारी (एडीईओ) पवन कुमार झारिया को साढ़े 3 लाख की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा है। लोकायुक्त डीएसपी दिलीप झरबड़े ने बताया कि झारिया ने विभाग के सहायक आयुक्त (डीईओ) शैलेश कुमार जैन के कहने पर रिश्वत ली थी।

लोकायुक्त पुलिस के मुताबिक शैलेश कुमार ठेकेदार से पांच लाख रुपए बतौर महीने की बंदी मांग रहे थे। साढ़े तीन लाख की रकम उन्होंने सिवनी के एडीओ पवन झारिया को देने को कहा था। इसी की शिकायत ठेकेदार राकेश कुमार साहू ने कर दी। जिसके बाद ये कार्रवाई की गई।

3 शराब दुकानों के चलाने की एवज में रिश्वत- लोकायुक्त पुलिस के मुताबिक, सिवनी के खैरा पलारी तिगड्डा पर रहने वाले राकेश कुमार साहू के पास 3 शराब दुकानों का ठेका है। दुकानों को चलाने के लिए आबकारी विभाग के सहायक आयुक्त शैलेश जैन ने 5 लाख रुपए महीने की मांग की थी। शिकायत की जांच हुई तो पता चला कि शैलेश जैन ने एडीओ पवन कुमार झारिया को रिश्वत की रकम के साढ़े तीन लाख रुपए देने को कहा है।

बोलेरो का टायर फटा, खड़े ट्रक से टकराई

पूर्व जनपद पंचायत अध्यक्ष गंभीर, पत्नी की मौत; नातिन के साथ एकादशी मनाने जा रहे थे

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम में बेकाबू बोलेरो खड़े ट्रक से टकरा गई। हादसे में केसला के पूर्व जनपद पंचायत अध्यक्ष गणपत उइके की पत्नी की मौके पर ही मौत हो गई। गणपत उइके और उनकी नातिन घायल हो गए।

एक्सीडेंट औबेदुल्लागंज-बैतूल नेशनल हाइवे 46 पर मंगलवार शाम करीब 7 बजे हुआ। गाड़ी बुरी तरह डैमेज हो गई। उसकी छत उखड़ गई।

सूचना मिलते ही केसला थाना प्रभारी श्रीनाथ झरबड़े, डायल 100 और 108 एम्बुलेंस मौके पर पहुंचे। राहगीरों की मदद से तीनों को सुखतवा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। यहां डॉक्टर ने महिला को मृत घोषित कर दिया। गणपत उइके को प्राथमिक उपचार के बाद इटारसी रेफर किया गया।

बुधनी में वोटिंग के दौरान बवाल, गाड़ियों के कांच फोड़े, शाम 5 बजे तक 73.82 प्रतिशत मतदान

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जैत में किया मतदान, कांग्रेस प्रत्याशी राजकुमार पटेल ने पत्नी संग डाला वोट

भोपाल/सीहोर (नप्र)। सीहोर जिले की बुधनी विधानसभा सीट पर उपचुनाव के लिए बुधवार को मतदान हुआ। श्योपुर जिले के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 02-विजयपुर एवं सीहोर जिले के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 156-बुधनी के सभी मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्ण मतदान जारी है। सुबह 7 से शाम 5 बजे तक क्र. 02- विजयपुर में 75.27 प्रतिशत एवं क्र. 156-बुधनी में 72.37 प्रतिशत मतदान हुआ है। दोनों ही विधानसभा क्षेत्रों में सुबह 7 से शाम 5 बजे तक औसत मतदान का प्रतिशत 73.82 है।इसी बीच बुधनी से कांग्रेस प्रत्याशी राजकुमार पटेल के समर्थकों ने उनके साथ मारपीट किए जाने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि शाहगंज में बीजेपी कार्यकर्ताओं ने उन पर हमला किया। गाड़ियों के कांच फोड़ दिए। राजकुमार पटेल के छोटे भाई को पीटा गया। कांग्रेस प्रत्याशी ने कहा कि खुलेआम गुंडागर्दी की जा रही है। लोगों को वोट डालने से रोका जा रहा है। साथ ही अपने पक्ष में मतदान के लिए दबाव भी बनाया जा रहा है।

बुधनी विधानसभा के शाहगंज पोलिंग बूथ पर तोड़फोड़ और कांग्रेस के लोगों के थाने पहुंचने के बाद पुलिस ने सख्ती बढ़ा दी है। इसके साथ ही गाड़ियों के टूटे कांच और अन्य तरह के वीडियो इंटरनेट मीडिया पर बहुप्रसारित भी हो रहे हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सुबह अपने गृहग्राम जैत में पहुंचकर मतदान किया।

बुधनी कांग्रेस प्रत्याशी बोले-फर्जी मतदान की कोशिश हुई,विजयपुर में हिंसा-बूथ कैप्चरिंग के आरोप - मध्यप्रदेश की दो विधानसभा सीटों- विजयपुर और बुधनी में उपचुनाव के लिए शाम 6 बजे वोटिंग होगी। दोपहर तीन बजे तक 66 फीसदी से ज्यादा वोटिंग हो चुकी है। विजयपुर में वन मंत्री रामनिवास रावत का मुकाबला कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा से है। बुधनी में भाजपा कैंडिडेट रमाकांत भार्गव के सामने कांग्रेस ने राजकुमार पटेल को उतारा है। विजयपुर के तेलीपुरा पोलिंग बूथ के मतदाताओं ने वीरपुर थाने पर प्रदर्शन करते हुए श्योपुर-मुरैना रोड पर चक्काजाम कर दिया। उनका आरोप था कि रावत समाज के लोग फर्जी मतदान कर रहे हैं जबकि आदिवासियों को वोट नहीं करने दिया जा रहा है।

वहीं, अंधीपुरा गांव में भी मतदाताओं ने भाजपा कार्यकर्ताओं पर वोट नहीं डालने देने का आरोप लगाया। पुलिस से शिकायत भी की है। इसके बाद कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल घंटी बजाते हुए चुनाव आयोग के भोपाल दफ्तर पहुंचा। कांग्रेस ने विजयपुर उपचुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए कहा कि आयोग सो रहा है इसलिए घंटी बजाकर उसे जगाने आए हैं। इसके जबाव में वीडी शर्मा ने चुनाव आयोग पर कांग्रेस के दबाव में काम करने का आरोप लगाया।

वीडी शर्मा ने कहा-चुनाव आयोग कांग्रेस के दबाव में काम कर रहा

बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने विजयपुर में कहा कि कांग्रेस हार के डर से जो दिमाग चला रही है उसका षडयंत्र सबके सामने आना चाहिए। कांग्रेस के नेता विजयपुर विधानसभा में अंदर कैसे घुसे ? उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। इस तरह की घटनाएं बताती हैं कि इलेक्शन कमीशन और प्रशासन कांग्रेस के दबाव में काम कर रहे हैं? हमारा कोई व्यक्ति है तो उसके खिलाफ भी कार्रवाई करें।

दौर्द गांव में पीठासीन अधिकारी से मारपीट, दबंगों को रोका था फर्जी मतदान से

विजयपुर क्षेत्र के दौर्द गांव में दबंगों ने पोलिंग बूथ पर फर्जी मतदान करने का प्रयास किया। जब पीठासीन अधिकारी ने उन्हें रोकने का प्रयास किया तो दबंगों ने उनसे मारपीट कर दी। मारपीट में पीठासीन अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया गया है।

एमपी में 15 नवंबर से बढ़ेगी ठंड

इंदौर-भोपाल, ग्वालियर में भी लुढ़का पारा ; हिल स्टेशन पचमढ़ी सबसे ठंडा 10.6 डिग्री

भोपाल (नप्र)। दीपावली बीतते ही मध्यप्रदेश में ठंड बढ़ गई है। प्रदेश का इकलौता हिल स्टेशन पचमढ़ी सबसे ठंडा है। यहां रात का टेम्प्रेचर 11 डिग्री सेल्सियस के नीचे चल रहा है। राज्य में 15 नवंबर से ठंड का असर और बढ़ जाएगा। पचमढ़ी समेत अन्य शहरों में पारा 10 डिग्री के करीब पहुंच सकता है। हालांकि, कड़ाके की ठंड दिसंबर में ही पड़ेगी। इस महीने से कोल्ड वेव यानी सर्द हवाएं भी चलने लगेंगी।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया-फिलहाल प्रशांत महासागर में अलनीलो-ला नीनो की स्थिति न्यूट्रल है। वहीं, आईओडी भी हिंद महासागर में न्यूट्रल है। इस वजह से नवंबर में पूरे महीने ही ऐसा मौसम रहेगा। दिसंबर में पारा लुढ़कने लगेगा। आखिरी सप्ताह में कोल्ड वेव भी चलेंगी।

ज्यादातर शहरों में पारा 20 डिग्री के नीचे- मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार-मंगलवार की रात प्रदेश के कई शहरों में ठंड का असर देखने को मिला। पचमढ़ी में पारा 10.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यहां दो रात से पारा 11 डिग्री से नीचे है।

मंडला में 12.8 डिग्री सेल्सियस, शाजापुर में 13.9 डिग्री, शहडोल में 14.2 डिग्री, मलाजखंड में 14.3 डिग्री, सीहोर में 14.4 डिग्री, राजगढ़ में 14.4 डिग्री, उमरिया में 14.5 डिग्री, बैतूल में 14.5 डिग्री, नौगांव में 15 डिग्री, सीधी में 15.2 डिग्री, छिंदवाड़ा में 15.4 डिग्री, टीकमगढ़ में 15.5 डिग्री और रीवा में तापमान 15.6 डिग्री रहा। प्रदेश के ज्यादातर शहरों में पारा 20 डिग्री के नीचे ही रहा।

बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल सबसे ठंडा रहा। यहां 15.6 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। इंदौर में यह 16.9 डिग्री, ग्वालियर में 17.2 डिग्री, जबलपुर में 15.8 डिग्री और उज्जैन में 16.8 डिग्री रहा।

नवंबर में ऐसा ही ट्रेंड- पिछले 10 साल जैसा ही ट्रेंड इस नवंबर में भी देखने को मिल रहा है। दिन गर्म हैं और रातें ठंडी। हालांकि, 15 नवंबर के बाद पारे में गिरावट देखने को मिलती है। 20 से 25 नवंबर के बीच कई शहरों में रात का तापमान 10 डिग्री सेल्सियस के नीचे पहुंच जाता है।

आगे ऐसा रहेगा मौसम- 15 नवंबर से रात के पारे में गिरावट होने का अनुमान है। अधिकांश शहरों में यह 15 डिग्री सेल्सियस से नीचे पहुंच सकता है।

शहडोल में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में वर्चुअली जुड़ेंगे पीएम

15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती पर धार में गर्वनर, सीएम की मौजूदगी में होगा समारोह

भोपाल (नप्र)। 15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती के मौके पर मप्र में दो बड़े आयोजन होंगे। आदिवासी नायक बिरसा मुंडा की 149वीं जयंती के मौके पर मप्र में अवकाश भी रहेगा। इस दिन शहडोल और धार में दो बड़े आयोजन मप्र सरकार की ओर से होंगे।

पीएम मोदी शहडोल में वर्चुअल जुड़ेंगे- शहडोल में होने वाले कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्चुअल जुड़ेंगे। सुबह 11 बजे से होने वाले कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ल, सांसद हिमाद्रि सिंह सहित तमाम स्थानीय जनप्रतिनिधि मौजूद रहेंगे।

आदिवासी वर्ग के लिए हो सकती हैं घोषणाएं- जनजातीय गौरव दिवस के मौके पर होने वाले कार्यक्रमों में आदिवासी वर्ग के लिए कई बड़े ऐलान हो सकते हैं। आदिवासी युवाओं के लिए स्वरोजगार को लेकर नई योजना शुरू करने का भी ऐलान हो सकता है। इसके साथ ही वन क्षेत्रों में टूरिज्म बढ़ाने की दृष्टि से भी आदिवासी वर्ग के लिए योजना का ऐलान हो सकता है।

धार में गर्वनर और सीएम की मौजूदगी में होगा कार्यक्रम

बिरसा मुंडा जयंती के मौके पर होने वाले जनजातीय गौरव दिवस का राज्य स्तरीय कार्यक्रम धार में होगा। इस कार्यक्रम में राज्यपाल मंगू भाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, जनजातीय कार्य मंत्री कुंवर विजय शाह, धार सांसद व केन्द्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर और विधायकों के साथ जनप्रतिनिधि मौजूद रहेंगे।

झारखंड में हुआ था बिरसा मुंडा का जन्म

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड के उलीहातू गांव में एक साधारण मुंडा परिवार में हुआ था। उनका जीवन बेहद कठिनाइयों से भरा था और उन्हें बाल्यावस्था से ही आर्थिक संघर्ष का सामना करना पड़ा। सामाजिक असमानता, अत्याचार और विदेशी शासकों द्वारा जनजातियों पर निरंतर हो रहे शोषण ने बिरसा मुंडा के अंतर्मन को विद्रोह की भावना से भर दिया। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा लागू जमींदारी प्रथा, धर्मांतरण और जनजातियों के पारंपरिक जीवन पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष किया। भगवान बिरसा मुंडा का जीवन जनजातीय समाज की उन्नति और उनके अधिकारों के लिए समर्पित रहा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 15 नवम्बर 2021 को 'राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस' घोषित किया ।

बालाजी की आंखों पर गंदगी पोती, हंगामा

गुना के मृगवास थाने में धरना दिया, कस्बा बंद कराया; झंडा निकालने के बाद हुई हरकत

गुना (नप्र)। गुना जिले के मृगवास में मंगलवार रात तनाव के हालात बन गए। यहां प्रसिद्ध हनुमान मंदिर में बालाजी की आंखों पर किसी ने गंदगी लगा दी। जैसे ही यह सूचना श्रद्धालुओं को मिली, उन्होंने बाजार बंद करा दिया था। चौराहे पर जाम कर दिया। देर रात तक प्रदर्शन चलता रहा। उन्होंने देवउठनी ग्यारस नहीं मनाई। घटना के विरोध में (बुधवार) को भी बाजार बंद थां। ग्रामीण चौराहे पर धरने पर बैठे हुए हैं।

मृगवास थाना प्रभारी बुंदेल सिंह सुनेरिया ने बताया कि मामले में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। कुछ संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है। हालांकि, अभी कुछ क्लियर नहीं हो पाया है। पुलिस की टीमें लगातार इस मामले में लगी हुई हैं।

कीर्तन करते समय आंखों पर पड़ी नजर- जानकारी के अनुसार हर मंगलवार को मृगवास में बालाजी का झंडा निकलता है, जो छतरी वाले बालाजी मंदिर से शुरू होकर नगर के प्रमुख चौराहों से होते हुए यहीं पहुंचता है। मंगलवार को भी यहां से झंडा निकाला गया। रात में करीब 7.30 बजे पुजारी यहां पर कीर्तन कर रहे थे, तभी कुछ लोगों ने देखा कि बालाजी की आंखों पर कुछ लगा है। पास जाकर देखा तो यह मैला लगा दिखा।

पॉलीथिन में भरकर लाए थे गंदगी- मंदिर परिसर में एक पॉलीथिन भी मिली है। यह माना जा रहा है कि इसी में भरकर गंदगी लिए थे। पिछले 15 दिनों में मृगवास के मंदिरों में यह तीसरी घटना है। 3 नवंबर को शिव मंदिर से अज्ञात बदमाश शिवलिंग तोड़कर ले गए थे। शनिवार को शासकीय स्कूल के पास तेजाजी महाराज ग्राउंड में स्थित शिवालय पर भी गंदगी भरकर रख दी थी। लोगों ने इसका भी जमकर विरोध किया था।

लोगों ने तहसीलदार की गाड़ी रोकी

सूचना मिलने पर कुंभराज तहसीलदार अमिता सिंह भी मौके पर पहुंचीं। नागरिकों ने उनकी गाड़ी भी कस्बे के बाहर ही रोक दी। इसके बाद उन्हें पैदल ही थाने तक जाना पड़ा। इस घटना में यह भी सवाल उठ रहा है कि मंगलवार होने पर हनुमान मंदिर में 7 से 7.30 के बीच असामाजिक तत्व ऐसी घटना कैसे कर गए, कोई उन्हें देख नहीं पाया।

लक्ष्मण सिंह बोले- दंगा कराने की साजिश है

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह बुधवार को मृगवास पहुंचे। लक्ष्मण ने घटना का विरोध करते हुए कहा कि इस तरह की तीसरी घटना है। लोग साम्प्रदायिक दंगा कराना चाहते हैं। मेरे पास इनके नाम भी हैं। हमने अपनी बात पुलिस के सामने रख दी है। अब आप लोग धरना कर समाप्त कर दीजिए। इस पर धरना दे रहे लोगों ने साफ मना कर दिया। लक्ष्मण ने कहा, जो लोग सोच रहे हैं कि दंगा कराने में सफल हो जाएंगे, उनको हम सफल नहीं होने देंगे। कोई तो है जो दंगा कराना चाहते हैं। मृगवास में ऐसे जो लोग हैं, उनको आप भी जानते हैं। मुझे तो राघोगढ़ में बैठकर पता लग जाता है।